ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त-२०१७

अगस्त-२०१७ ◆ वर्ष ६ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

क्षमा, शील है मानवता की,
और द्वेष की नाशक है।
अद्भुत वह व्यक्तित्व विश्व में,
वह अपना ही शासक है।
बालक में बचपन से ऐसी,
प्रबल भावना जग जाय।
सत्यार्थ प्रकाश का अनुशीलन कर,
क्षमा भावना रम जाय।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ६८

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम !
एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

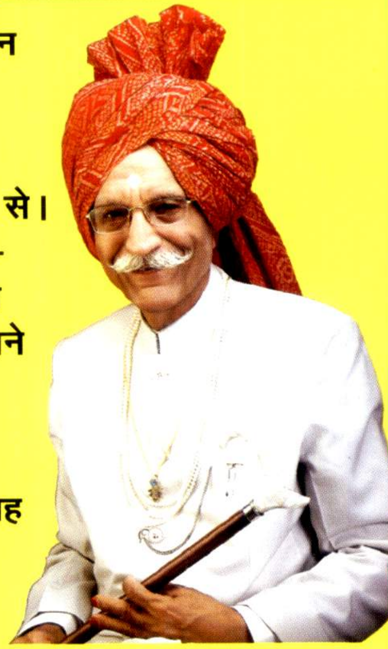

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे - सब्जी, घी - तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च - मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८ IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११८
श्रावण पूर्णिमा
विक्रम संवत्
२०७४
दयानन्दाब्द
१९३

August - 2017

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

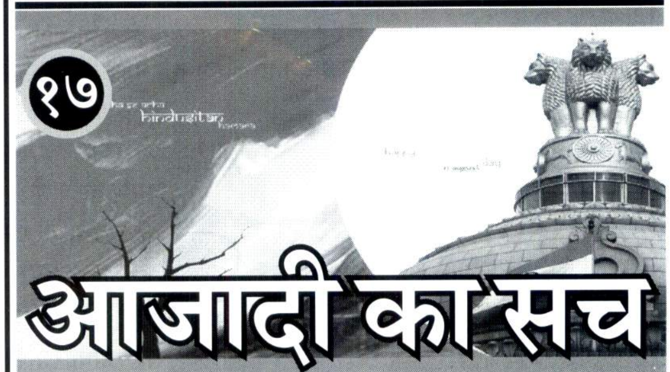

समाचार २६
हलचल २७

०४ वेद सुधा
०६ मानवता का भूषण है क्षमा
०९ डॉ. सुखदेवचन्द सोनी का संदेश
११ गौहत्या पर प्रतिबन्ध ....
१४ निष्काम भाव से रहना ही योग है
१५ विमर्श : वेदों में इतिहास
१६ कथा सरित- जिओ और जीने दो
२० सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/१७
२१ सिक्ता निवावरी
२२ ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज....
२८ स्वास्थ्य- पक्षाघात (स्ट्रोक) लक्षण
२९ स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती स्मृति दिवस
३० सत्यार्थ पीयूष- न्याय-निर्णयन

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ६ अंक - ०३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

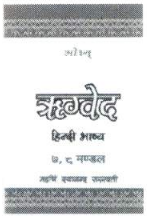

वेद सुधा

ईश्वर का प्रत्यक्ष अवबोधन

अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मह्ना।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्यादर्दिरो भुवना दर्दरीमि।। - ऋग्वेद ७/१००/४
ऋषिः- इन्द्रः। देवताः- इन्द्रः। छन्दः- पादनिचृत्त्रिष्टुप्।

पदपाठ- अयम्। अस्मि। जरितः। पश्य। मा। इह। विश्वा। जातानि। अभि। अस्मि। महान्। ऋतस्य। मा। प्रदिशः। वर्धयन्ति। आदर्दिरः। भुवना। दर्दरीमि।।

(अयम् अस्मि) यह मैं हूँ। (जरितः) हे स्तुतिकर्त्ता, (मां इह पश्य) मुझे यहाँ देख (प्रत्यक्ष कर)। (विश्वा जातानि अभि अस्मि) समस्त उत्पन्न सृष्टि में सब ओर से मैं {व्याप्त} हूँ, (मह्ना) {अपनी} महान् महिमा से। (ऋतस्य प्र-दिशः) ऋत प्रकृष्ट रूप से उपदेश करने वाले ऋताचारी, (मा वर्धयन्ति) मुझे बढ़ाते हैं/विस्तार करते हैं। (आ दर्दिरः भुवना दर्दरीमि) संहार (छिन्न-भिन्न) करने की शक्ति रखने वाला {मैं} समस्त भुवनों (सृष्टि) को अन्त (प्रलयकाल) में विश्लेषित कर देता हूँ।

आदि काल में ऋषियों, मनीषियों, चिन्तकों, विचारकों, यहाँ तक कि साधारण मनुष्यों को भी एक विषय जो सदैव कौतूहल एवं जिज्ञासा का केन्द्र-बिन्दु रहा है, वह है- 'ईश्वर'! क्या ईश्वर है; यदि है, तो कैसा है; क्या करता है; क्यों कोई ईश्वर की स्तुति करे; कैसे उसका दर्शन हो, अर्चन, वन्दन हो? क्या वह ऐसा है, कि उसकी मरजी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता? क्या जो इन्द्रियातीत है, उसका प्रत्यक्ष सम्भव है? क्या यह हास्यास्पद नहीं कि जो स्वयं रचयिता तथा पोषणकर्त्ता हो, वह स्वयं ही संहार तथा विनाश करने वाला हो?

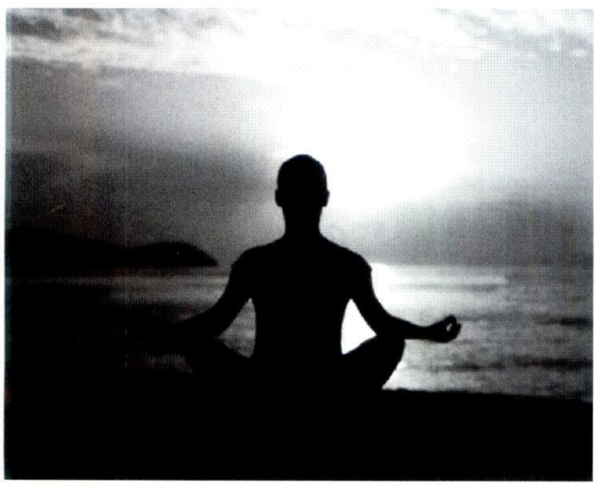

कुछ विचारक ऐसे भी हुये हैं, जिन्होंने पर्याप्त चिन्तन के पश्चात् ईश्वर के अस्तित्व पर ही प्रश्न-चिह्न लगा दिया हैं उनका कहना है कि ईश्वर जैसी कोई वास्तविक सत्ता है ही नहीं। उनका सारा दर्शन अनीश्वरवाद पर आधारित है। कुछ ऐसे भी चिन्तक हैं, जिनके विचार में 'ईश्वर' केवल एक काल्पनिक सत्ता है जिसको कुछ भीरु, निर्बल और मूर्ख लोगों ने अपनी कल्पना के आधार पर गढ़ रखा है। जिसकी जैसी भावना होती है, उसी के अनुरूप वह अपना 'ईश्वर' गढ़ लेता है, और अपने मन की भावनाओं को पूजन-अर्चन से अभिव्यक्त कर लेता है।

कुछ-कुछ इसी प्रकार के संशय प्रस्तुत मंत्र से पूर्व के मंत्र में (ऋग्वेद ८/१००/३) में उठाये गये हैं, जो इस प्रकार हैं- **'नेन्द्रो' अस्तीति नेम उ त्व आह'** 'कोई-कोई उस को ऐसा कहता है कि 'इन्द्र' (परमेश्वर) नहीं है' (अर्थात् उसका अस्तित्व ही नहीं है)। **'कः ईं ददर्श'** 'कौन उसको देखता है'? फिर हम **'कम अभि स्तवाम'** किसकी स्तुति करें'? एक बात और, ऋग्वेद ७/१००/३ मंत्र का मन्त्रदृष्टा ऋषि 'नेमोभार्गवः' ईश्वर की स्तुति को प्रेरित तो करता है, पर एक निराले अन्दाज से। **'प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय, सत्यं यदि सत्यमस्ति।'** 'यदि सत्य ही परमात्मा सत्य है, तो हे वाजयन्तः, उस ऐश्वर्यवान इन्द्र के लिये स्तुतियों से अच्छी प्रकार भर दो।'

स्तुतिकर्त्ता के ईश्वर-सम्बन्धी इन सारे संशयों का निवारण करता है, ऋग्वेद के आठवें मंडल के सौवें सूक्त का यह चौथा मंत्र। आइये इस पर विचार करें।

पहली बात, जो यह कहता है **'न इन्द्रः अस्ति'** ईश्वर नहीं है उसके संशय को दूर करने के लिये वह 'इन्द्रः' (जो मंत्र का दृष्टा ऋषि भी है और देवता भी) स्वयं कहता है- **'अयम् अस्मि'** 'यह मैं हूँ।' जब मैं अपनी विद्यमानता का स्वयं बोध करा रहा हूँ, तो यह कहना, कि मैं हूँ ही नहीं, स्पष्टतः सत्यता को नकारना है।

कक्षा में अध्यापक पूछता है कि 'क्या देवदत्त है?' और देवदत्त स्वयं उत्तर देता है 'जी श्रीमान्, मैं हूँ' तो बाकी छात्रों का यह

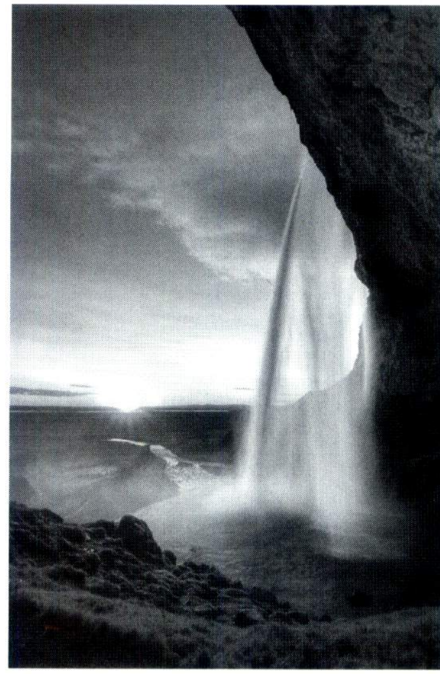

मानना, या शिकायत करना, कि देवदत्त नहीं है, कोई मायने नहीं रखता। इसी प्रकार वेद में, जो परमेश्वर की ही कल्याणी वाणी है, स्पष्ट स्वीकारोक्ति है, कि 'यह मैं हूँ' तो ईश्वर के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाना कोई अर्थ नहीं रखता। दार्शनिक स्तर पर ईश्वर-सिद्धि में प्रमाण तो बहुत से हैं, पर ईश्वर जब स्वयं ही अपने अस्तित्व को स्वीकारता हो, प्रत्यक्ष कहे 'यह मैं हूँ', तो फिर किसी और प्रमाण की आवश्यकता नहीं रह जाती।

दूसरी बात, जिसकी ओर मंत्र इंगित करता है, वह यह कि बिना परमेश्वर का साक्षात्कार किये हुये उस की भरपूर स्तुति करते रहना एक प्रकार से अर्थहीन है। 'स्तुति' का अर्थ है, जो जैसा गुण, कर्म, स्वभाव वाला है, उसके गुण, कर्म, स्वभाव का यथावत् वर्णन करना। जब परमेश्वर को जाना नहीं, समझा नहीं, देखा नहीं, तो उसकी यथावत् स्तुति कैसे हो सकती है। बिना किसी को जाने, समझे, देखे-भाले, उस के विषय में जो कुछ भी कहा जायेगा, स्वभाविक है कि वह कल्पना या अनुमान पर ही आधारित होगा। कल्पना या अनुमान यदि बुद्धिपूर्वक, युक्ति और तर्क पर आधारित हो, तो सम्भव है, कुछ अंशों में सत्य सिद्ध हो जाय; पर पूर्ण सत्य तो तभी सम्भव है, जब जिसके बारे में जो कुछ कहा जाय, उसका पूर्ण साक्षात्कार कर लिया गया हो। वेद के ऋषियों की यही विशेषता है कि वे मंत्र-द्रष्टा हैं; जो उन्होंने स्वयं साक्षात् किया है, उसी को वह दूसरों को साक्षात् कराते हैं। यहाँ मंत्र में स्तुतिकर्त्ताओं के लिये कहा गया है- **'जरितः, मां इह पश्य'** स्तुतिकर्त्ता, मुझे यहाँ देख (प्रत्यक्ष कर)। पहले ईश्वर को यहाँ प्रत्यक्ष कर, फिर स्तुति कर।

'इह' शब्द यहाँ बड़ा महत्वपूर्ण है। कहाँ देखें हम 'ईश्वर' को? क्या पुष्कर, अयोध्या, मथुरा, काशी जायें या मक्का, मदीना, यरुशलम जायें? क्या मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर जायें, या कहीं और। मन्त्र कहता है, **'इह'** यहीं, इसी पुर में, अपने अन्दर ही, इसी पिण्ड में, इसी जगत् में। कहीं जाने की जरूरत नहीं। जब परमेश्वर स्वयं कहता है- 'मैं यही हूँ, तू मुझे यहीं देख' तो कहीं जाने की जरूरत कहाँ रही? जरूरत एक ही चीज की है, और वह है 'जिज्ञासा'- जानने की, देखने की तीव्र इच्छा।

दूसरा महत्वपूर्ण शब्द है- **'पश्य'** जिसका सामान्य अर्थ है- 'देख'। पर क्या कोई ईश्वर को इन आँखों से देख पाया है? स्थूल से तो स्थूल का ही दर्शन होगा, परन्तु जो सूक्ष्म से सूक्ष्म है, उसका दर्शन (अनुभवीकरण) सूक्ष्म ही कर सकता है। अतः देखने के लिये जो प्रक्रिया हमको अपनानी होगी, वह इस प्रकार होगी कि स्थूल इन्द्रियों से हम इस सृष्टि का अवलोकन करें। देखें परमात्मा की उस अद्भुत कारीगरी को, उस के सौन्दर्य को, उस के काव्य को, जो सर्वत्र गोचर है, बिखरा पड़ा है। और सूक्ष्म आत्मा में साक्षात्कार करें उस अन्तर्यामी परमात्मा का जो सूक्ष्म से सूक्ष्म, किन्तु महत्ता से महान् से महान् है। इसीलिये वेद में आया-

अन्ति सन्तं न जहात्यन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति।। - अथर्व. १०/८/३२

'वह (परमात्मा) इतना निकट है कि कोई उसको छोड़ नहीं सकता। वह इतना निकट है, कि कोई उसे देख नहीं सकता। अतः उस देव के काव्य (रचना) को देख, जो न कभी मरता, न जीर्ण होता है।' सच बात यह है कि जिसको कलाकृति से कलाबोध न हो सका, वह कलाकार का गुणांकन और उसकी महत्ता को क्या समझ सकेगा। जिसे काव्य में कोई रसानुभूति नहीं हुई, वह उस काव्य के रचयिता कवि की क्या प्रशंसा कर सकेगा। इसीलिये वेद ने कहा-

यो विद्यात्सूत्रं विततं यस्मिन्नोताः प्रजा इमाः।
सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात्स विद्याद् ब्राह्मणं महत्।। - अथर्व. १०/८/३७

'जो उस विस्तृत सृष्टि रूपी सूत्र को जान लेता है, जिसमें यह सब प्रजायें (समस्त प्राणिवर्ग, चर और अचर जगत्) उरोये-पिरोये हुये हैं, और जो इस सूत्र के भी सूत्र को जान लेता है, वह उस महान् ब्रह्म के स्वरूप को जान लेता है।' ऐसा ज्ञानी **'वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र ...'** (यजुः. ३२/८) वेनः उस परम सत्ता को (दृश्य-रूपी) गुहा में साक्षात् देखता है। तत् सत् को यदि देखना है, तो 'वेन' बनना होगा। और कहीं जाने की जरूरत नहीं। साधना, चिन्तन और ज्ञान के आश्रय से उसको अपने अन्तर में ही देखना होगा। वह कह तो रहा है- 'मैं यही हूँ मुझे यहाँ ही देख।'

लेखक- महात्मा गोपाल स्वामी सरस्वती

क्रमशः ....

साभार- वेद-स्वाध्याय-प्रदीपिका

❑❑❑

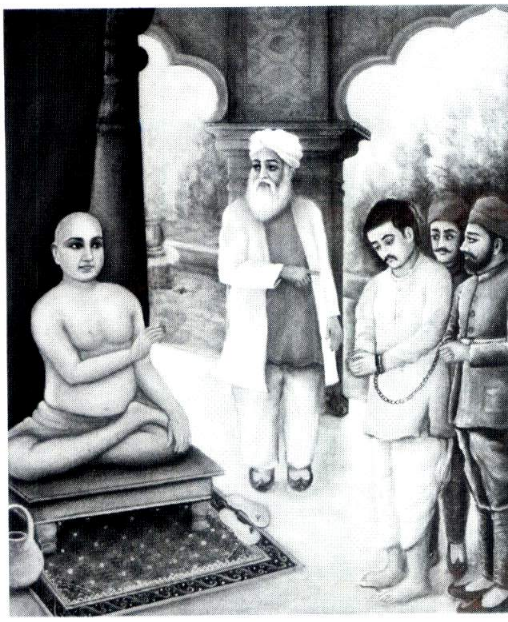

मानवता का भूषण है क्षमा

स्वामी दयानन्द सरस्वती उन दिनों अनूप शहर में थे। समाज में जो पाखण्ड अन्धविश्वास और धर्म के नाम पर मिथ्याचारों का बोलबाला था स्वामीजी निर्भीकता के साथ उसका खंडन करते थे। शठ लोग उनके तर्कों के उत्तर तो दे नहीं सकते थे, अधिक ईर्ष्यालु जन उनके प्राण हरण का प्रयास करते थे, ऐसे प्रयासों से उनका जीवन चरित्र भरा पड़ा है। बात अनूप शहर की थी। उन दिनों श्री महाराज वहाँ धर्म प्रचार कर रहे थे। एक दिन एक शठ व्यक्ति ने स्वामी जी को विष दे दिया। स्वामी जी को अनुमान हो गया तो कुछ क्रियाओं के द्वारा उन्होंने उस विष को शरीर से निकाल दिया। किसी प्रकार यह बात अनूप शहर के तहसीलदार सैयद मुहम्मद साहब को ज्ञात हो गयी। उन्होंने विषदाता को गिरफ्तार कर लिया और स्वामी जी के समक्ष ले आये। स्वामी जी ने तत्काल ही उस व्यक्ति को क्षमा करते हुए रिहा करने के लिए कहा यह कहकर कि वे संसार में व्यक्तियों को कैद से छुड़ाने आये हैं न कि कैद करवाने। यह एक उच्च कोटि के संन्यासी का उदात्त क्षमाभाव था जिसकी चरम परिणिति अंतिम समय में घौड़ मिश्र को माफ करने में दिखायी देती है।

जब रसोइए ने जोधपुर प्रवास में विष दिया और महर्षिवर को ज्ञात हो गया तो रसोइये को यही कहा कि उसने एक महान् कार्य के संपन्न होने में विघ्न डाल दिया। पुनः सब कुछ ईश्वरार्पण करके रसोइए को उसके कृत्य के प्रति न केवल क्षमा कर दिया वरन् उसे मुद्राएँ प्रदान कर वहाँ से भाग जाने के लिए कह दिया। **ये क्षमा कोई आसान कार्य नही है।** क्योंकि केवल मुख से कह देना मात्र 'कि मैंने तुम्हें क्षमा किया' पर्याप्त नहीं है वरन् दोषी को दिल से क्षमा कर देना ही सच्ची क्षमा है। जिस व्यक्ति ने आपका अपकार किया है उसके प्रति सर्वप्रथम क्रोध जन्म लेता है, जो धीरे धीरे घृणा में बदल जाता है। इसी मध्य द्वेष अपना आसन जमा लेता है। आवश्यक है कि क्षमा करने से पूर्व उस व्यक्ति के प्रति उत्पन्न हुए क्रोध, ईर्ष्या व द्वेष को सर्वथा त्याग दे जो कहने में तो सामान्य प्रतीत होता है पर है अत्यन्त कठिन। द्वेष का दावानल व्यक्ति को दिन रात जलाये जाता है उसकी कल्पना भी कठिन है। व्यक्ति यहाँ तक सोचता है कि मेरा चाहे कुछ भी बिगड़ जाय पर सामने वाले का अहित अवश्य ही हो। ऐसी मनःस्थिति के साथ कोई किसी को क्षमा कैसे कर सकता है। और अगर करता भी है तो वह ऊपरी, दिखावटी क्षमा ही होगी, वास्तविक नहीं। यही कारण है कि आज बच्चे या बड़े किसी काम को गलत करते हैं 'सॉरी' भी कह देते हैं पर पुनः उसी गलत कार्य को करते हैं यह इस कारण कि उन्होंने क्षमा दिखावे के तौर पर ऊपरी रूप से माँग ली थी। मन से उस कृत्य को समूल हटा नहीं दिया जिसके लिए क्षमा माँगी गयी थी। द्वेष के विकराल रूप को देखते हुए ही और यह जानकर कि जीवन में द्वेष के रहते क्षमा असंभव है महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संध्या के मनसा परिक्रमा मन्त्रों के माध्यम से दिन में १२ बार 'द्वेषभाव' को परमात्मा के न्याय हेतु समर्पित करने का निर्देश दिया है। यहाँ यह समझ लेना चाहिए कि वैयक्तिक रूप से इस उदात्त गुण का निर्विघ्न अबलम्बन किया जाना चाहिए परन्तु समाज या देश के अपराधी को क्षमा करना अयुक्त है। हमने जो उदाहरण दिए हैं उनमें क्योंकि महर्षि दयानन्द ने अपचारी के कृत्य को स्वयं के प्रति अपराध माना अतः संन्यास धर्म के उच्चतम आदर्श का पालन करते हुए उन्होंने अपराधी को क्षमा कर दिया परन्तु जब बाबू हरिश्चन्द्र चिन्तामणि ने वेदभाष्य के हिसाब किताब में हेर फेर की तब जनसामान्य का पैसा होने के नाते ऋषि उन्हें क्षमा नहीं करते वरन् श्याम जी कृष्ण वर्मा जब इंग्लैण्ड में थे तब उन्हें पत्र लिखा कि वह बाबू अर्थात् हरिश्चन्द्र कहाँ हैं पता करना हमें उनपर नालिश करनी है। अतः क्षमा के क्रम में इस अन्तर को ध्यान में रखना चाहिए।

राजधर्म में एक स्थिति के बाद क्षमा का कोई स्थान नहीं है यह ध्यातव्य है। अपराधी को दण्ड आवश्यक है। जहाँ दण्ड लाल आँखें किये घूमता है न्याय और शान्ति वहीं स्थापित रहती है। दुश्मन जब राष्ट्र की अस्मिता के अपहरण की चेष्टा करे तो क्षमा उत्तम मार्ग नहीं है।

परन्तु क्षमा दैवीय गुण है इसमें कोई संदेह नहीं। यहाँ यह और निवेदित कर दें कि क्षमा करने वाला अपराधी पर उपकार करता है यह तो सत्य है पर वह वस्तुतः अपने ऊपर अमित उपकार कर रहा होता है क्योंकि जब तक वह अपने प्रति अपराध करने वाले को क्षमा नहीं कर देता वह क्रोध, विद्वेष तथा घृणा की अग्नि में जल रहा होता है, उसके चित्त को शान्ति नहीं मिलती पर जैसे ही वह सामने वाले को क्षमा कर देता है उसका तन मन शीतल हो जाता है। इसकी अनुभूति तो वही कर सकता है जो इस दौर से गुजरा हो।

स्टीफन ओवेन्स जिसकी माँ ने भाड़े के एक आदमी द्वारा उसके पिता की हत्या करवा दी, अपनी माँ से अत्यन्त घृणा करते रहे। यह स्वाभाविक भी था। वे १३ वर्ष तक अपनी माँ से मिलने जेल में भी नहीं गए। परन्तु एक दिन उनके अन्दर बहुत कुछ पिघल गया। १२ अगस्त १९९८ को अंततः उन्होंने अपनी माँ से जेल में मिलने का निश्चय किया। माँ-बेटे की तीन घंटे की भावुक मुलाकात में बहुत कुछ घट गया और ओवेन्स ने अपनी माँ को माफ कर दिया। वे जैसे स्वयं क्रोध और घृणा के जाल से मुक्त हो गए।

ऐसे अन्य भी कई उदाहरण हैं ।

१९वीं शताब्दी के मध्य रवांडा में भयंकर नरसंहार हुआ। इसमें इमेकुली इलीबेजिजा नामक महिला के पूरे परिवार की निर्मम हत्या कर दी गयी। वह स्वयं अन्य सात महिलाओं के साथ एक छोटे से बाथरूम में बन्द होने के कारण बच गयीं। **इलीबेजिजा ने अपराधियों को माफ करने का निश्चय किया क्योंकि उन्हें लगा कि ऐसा न करने से उनके अन्दर की कड़वाहट और घृणा उन्हीं को समाप्त कर देगी।** अतः उन्होंने उन बच्चों की, जो कि इस नरसंहार में अनाथ हो गए थे मदद करने के लिए एक संस्था बनाकर उनके हित में कार्य कर अपने जीवन को एक सार्थक दिशा दी। उन्होंने left to tell नामक एक best seller लिखी।

समेरा अलीनेजद नाम की ईरानियन महिला के किशोर बेटे की हत्या कर दी गयी। समेरा एक क्षण को भी हत्यारे के प्रति कोमल नहीं हो सकी परन्तु जब उस हत्यारे को फांसी दी जा रही थी अचानक समेरा के अन्दर कुछ घटा और उसने हत्यारे को क्षमा कर दिया। भारत में ग्राहम स्टेन्स की पत्नी ने भी अपने पति तथा दो बच्चों के हत्यारों को माफ कर, क्षमा का एक अभिनव उदाहरण प्रस्तुत किया।

क्षमा के महत्त्व को भारतीय मनीषा ने अत्यधिक महत्त्व दिया है।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥ - मनु. ६/९२

इस प्रकार क्षमा को धर्म के दश लक्षणों में से एक माना है। होली के त्यौहार पर यही अपेक्षा की जाती है कि वर्ष भर में जो हुआ सो हुआ अब उस पर धूल डालो। जैन मत में तो पवित्र पर्यूषण पर्व के पश्चात् क्षमावणी का पर्व मनाया जाता है। जिसमें एक दूसरे से क्षमा माँगी जाती है। अतः क्षमा का भाव हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है पर इसे मात्र औपचारिकता से निकाल कर वास्तविक क्षमा के स्तर तक पहुँचाना होगा। इससे पीढ़ियों के वैर सैकेण्डों में समाप्त हो जाते हैं। परन्तु यह भी है कि क्षमा करने के लिए बड़ा दिल चाहिए। अपने अपराधी को क्षमा कर देना कोई मामूली बात नहीं है। इसीलिए कहा गया है **'क्षमा वीरस्य भूषणम्'**। महात्मा गाँधी ने भी कहा है कि कमजोर व्यक्ति किसी को क्षमा नहीं कर सकते। क्षमा से आप किसी को अपनी गलती सुधारने का दूसरा मौका देते हैं। **यह बहुत बड़ी बात है कि आपके क्षमा कर देने से कोई अपराध बोध से मुक्त होकर अपनी जिन्दगी को नए सिरे से संवार सके और गलती को भूलकर फिर कभी उसे न दोहराते हुए जीवन को आगे बढ़ा सके। इस क्षमा में प्रेम का भाव भी गुम्फित होता है।** मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने कहा है कि जिसमें क्षमा करने का माद्दा नहीं होता उसमें प्रेम की शक्ति भी नहीं होती।

अतः विश्व क्षमादान दिवस की पृष्ठभूमि में हम क्षमा दान की प्रवृत्ति को विकसित करें। इससे धीरे धीरे द्वेष की भावना का खात्मा होगा और यही श्रेष्ठ मानव समाज के लिए हितकर है।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

❑❑❑

श्री कृष्णा जन्माष्टमी पर विशेष

गीता के अमर गायक श्रीकृष्ण !

–(स्मृतिशेष) आचार्य प्रेमभिक्षु –

श्रीकृष्ण ने आत्मना पूर्ण प्रयत्न किया कि युद्ध टल सके, वे उसके भीषण परिणामों को जानते थे। अपने सन्धि प्रयास के विफल होने पर भी उन्होंने एक बार और अन्तिम बार युद्ध को टालने का प्रयत्न तब किया जब उन्होंने हस्तिनापुर से लौटते समय कर्ण को पाण्डव पक्ष ग्रहण करने की प्रेरणा की। उनका विश्वास था कि कर्ण के पाण्डव पक्ष में आ जाने से दुर्योधन निराश हो जायेगा। युद्ध की विभीषिका टल जायेगी। पर यहाँ भी वे सर्वथा असफल रहे। अब कृष्ण समझ गये कि यह युद्ध स्वाभाविक और सहजता प्राप्त है। यह अवश्यम्भावी है। इसे टालना और भी भयंकर होगा तभी उनकी अमर वाणी गूँज उठी- **'युद्धाय कृत निश्चय।'**

युद्ध क्षेत्र में आकर अर्जुन को मोह ने आ घेरा। कृष्ण जानते थे अर्जुन क्षत्रिय है, वह क्षात्र धर्म के मर्म को जानता है, अन्याय का प्रतिकार उसका स्वभाव है। युद्ध के बिना वह रह नहीं सकता। यह व्यामोह क्षणिक है। यह वैराग्य वृत्ति सर्वथा झूठी और अकल्याणकर है। अर्जुन की इस पलायन वृत्ति के परिणामों का विचार कर श्रीकृष्ण का अन्तर सिहर उठा। कृष्ण जी ने कहा-

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्।
अनार्य जुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन।। - गीता २/२

हे आर्य अर्जुन! तुम्हें युद्धस्थल में यह मोह कैसे उत्पन्न हुआ? यह तो अनार्यों का कर्म है। यह न स्वर्ग देने वाला है और न कीर्ति करने वाला है।

क्लैव्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत् त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ट परंतप।। - गीता २/३

अर्जुन! नपुंसकता मत दिखा। यह तुझे शोभा नहीं देता। हृदय की दुर्बलता त्याग और युद्ध कर।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।। - गीता २/२३

अर्जुन आत्मा अमर है। शस्त्र इसे काट नहीं सकते। अग्नि इसे जला नहीं सकती, जल इसे गला नहीं सकता और वायु इसे सुखा नहीं सकती।

इस प्रकार उन्होंने अर्जुन को आत्मा की अमरता का उपदेश दिया। वैदिक धर्म के सार सर्वस्व वर्णाश्रम धर्म विहित क्षात्र धर्म का स्मरण कराया। सोई हुई कर्तव्य बुद्धि को उद्‌बुद्ध किया। कर्मयोग का रहस्य समझाया। उन्होंने अर्जुन को कहा- 'ईश्वरार्पित बुद्धि से लोक संग्रहार्थ, विश्व कल्याण की भावना से प्राप्त कर्तव्य का पालन स्वयं यज्ञ है। अन्यायी स्वयं अपने पाप से मरा हुआ है। तुझे तो निमित्त मात्र बनना है। **'निमित्त मात्रेण भव सव्यसाची'** अर्जुन याद रख-

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।। - गीता २/३७

'यदि युद्ध में मर गया तो तुझे स्वर्ग मिलेगा और जीत गया तो पृथ्वी का राज्य। अतः युद्ध के लिये निश्चय कर और खड़ा हो।' अर्जुन जैसे सोते से जाग उठा। और कह उठा- **'करिष्ये वचनं तव'** यही है गीता।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। - यजु ४०/२

यह पवित्र वेद मंत्र ही गीता की आत्मा है। गीता मानो इस एक वेद मंत्र की व्याख्या मात्र है। यज्ञार्थ, परोपकारार्थ किये हुए कर्म बन्धन का कारण नहीं होते। जीवन के अन्तिम क्षण, अन्तिम श्वास तक वर्णाश्रम धर्म विहित कर्तव्य कर्मों में रत् रहना ही बन्धन-मुक्ति व प्रभु-प्राप्ति का एकमात्र उपाय है, अन्य नहीं। यही गीता-उपदेश है। 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' अथवा 'अहं ब्रह्मास्मि' की रट लगाकर, संसार को झूठा बताकर कर्तव्य कर्म से विरत् कर मनुष्य को आलसी, निकम्मा और भगोड़ा बनाने वाले स्वयं झूठे, अकर्मण्य और ईशद्रोही हैं। यह गीता तत्व और उसकी मूल भावना, गीता का यह उपदेश श्रीकृष्ण के जीवन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग है। सच तो यह है कि यह अंग महत्ता में अपने अंगों से भी कहीं आगे बढ़ गया है। संसार के इतिहास में कृष्ण के जीवन का उतना प्रभाव नहीं पड़ता जितना उनके वेदाश्रित गीता सन्देश का।

❑❑❑

साभार- शुद्ध कृष्णायन

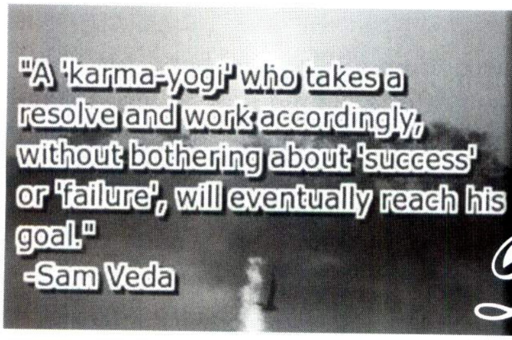

Message from Dr Sukhdev Soni

This year's mahayajna, Mahasammelan 2017 at the Arya Samaj of Chicagoland has a very special place in my heart. After nearly 6 years without a full time Priest, we have had the honor and privilege of having Acharyaji Hari Prasad Kotta, his wife Lalitaji and 11 year old son Arush amidst us today, dedicated full time to moving the Arya Samaj forward. I welcome them to our Arya Samaj family in Chicagoland and trust that they will support the expansion of the Arya Samaj principles in the Chicagoland area and beyond. We have already started weekly talks from the Vedas, Hindi classes, Sanskrit classes, and outreach to the Arya Pratinidhi Sabha of North America among other activities. More remains to be done.

"Be noble to all mankind, animals and environment"

Why have my wife and I dedicated our lives to moving the Arya Samaj of Chicagoland forward?

In India and America, and in the tiny nation of Burma, or Myanmar, from where I originally come, our countries diversity is its strength. We live in countries where a grandson of a cook can become President (Obama) and son of a tea seller can become Prime Minister (Modi) and in Burma, where Aung San Suu Kyi, a woman leader who overcame hardships to become one of the most respected names in the Government. Through this diversity we have achieved great innovation and progress.

Arya Samaj is a progressive community organization that promotes peace, tolerance, and diversity. Arya Samaj principles are rooted in the ancient texts of India, the Vedas, and the oldest scriptures in the world. Maharishi Dayanand Saraswati, founder of Arya Samaj promoted the principles of the Vedas and its fundamental message: to do utmost good and to promote welfare of the whole world. The Vedas are not to preach any particular religion but to promote a spiritual outlook in life.Vedas teach us to promote physical, spiritual and social development of all mankind without any distinction of caste, color, creed, religion, race or sex.Not just individual progress but collective, community progress. Be noble to all mankind, animals and environment.

This message is more important today, then perhaps ever before.

I urge each of you to make a commitment today. A commitment to devote part of your life to community service, community activities. To support not only your families, but neighbors, friends, even those people who may never be in a position to return the favor. The first step in continuing the progress of our rich culture and diverse heritage is to continue our tradition of coming together as a community and welcoming others to be part of it as well. If each of the 200-300 active families of the

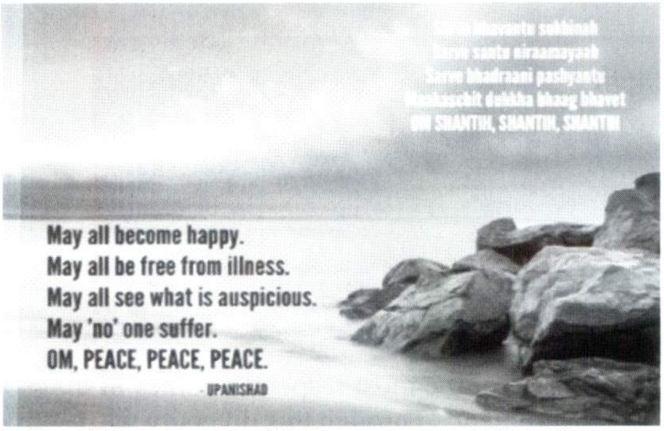

Arya Samaj community bring in one new family to learn about the Samaj this year, we will double our outreach. And expand the message of peace, community and harmony. I thank many of you who have made this vision of Arya Samaj come through. We will always remember the dedication and commitment of Vedlankarji who was with us at Arya Samaj for 15 years until his death 6 years ago. I am grateful for the tireless services of Mukund Panchalji, Ramesh Malhanji, Shashi Tandonji and Savita Bhatiaji who all stepped in to ensure that the Arya Samaj activities continued while we searched for a new Priest. I thank my executive committee members for their incessant efforts behind the scenes to keep the vision of our community alive and thriving. And finally, I thank all the members and attendees without whose love and commitment our mission would not be successful.

On the occasion of my 83rd birthday, Saroj and I welcome each of you to the Mahasammelan 2017.

❑❑❑

आचार्य हरिप्रसाद जी बने आर्यसमाज शिकागोलैण्ड, यू.एस.ए. के पुरोहित

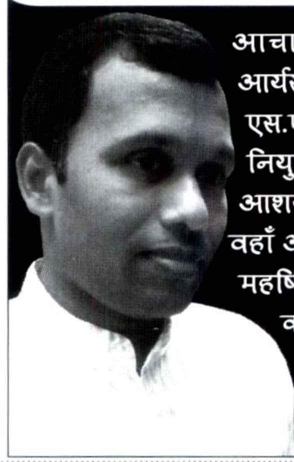

आचार्य हरिप्रसाद जी की आर्यसमाज शिकागोलैण्ड, यू. एस.ए. में पुरोहित के रूप में नियुक्ति पर हार्दिक बधाई, इस आशय व कामना के साथ कि वे वहाँ अपनी विद्वता व पुरुषार्थ से महर्षि दयानन्द की विचारधारा को प्रचारित कर, मानवता की सेवा में अहर्निश संलग्न रहेंगे।

– शुभेच्छु– अशोक आर्य

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

महर्षि दयानन्द द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की लेखन स्थली को देख हृदय श्रद्धा से अभिभूत हो गया। ऋषि जीवन से सम्बन्धित दीर्घा अत्यन्त सुन्दर एवं प्रेरक है। सत्यार्थप्रकाश स्मारक न्यास के सौन्दर्य को बढ़ाने एवं इसके प्रचार-प्रसार की अत्यधिक आवश्यकता है। जिससे अधिकाधिक लोग इस ओर आकर्षित हो सकें। वास्तव में यह आर्यों का तीर्थ स्थल है। जहाँ से प्रेरणा लेकर आर्यजन अधिकाधिक उर्जा प्राप्त कर वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हो सकते हैं। **- राजेश सेठी, मेरठ**

स्वामी दयानन्द के बारे में कौन नहीं जानता। परन्तु आज उनके बारे में विस्तार से जानने को मिला। उनका व्यक्ति अनुपम है। उनकी प्रेरणाएँ हमारा हमेशा मार्ग दर्शन करेंगी। मैं बहुत आभारी हूँ इस संस्था का, जिनके कारण मुझे स्वामी जी के बारे में विस्तार से जानने को मिला। सदैव हमारा मार्ग दर्शन करेंगे स्वामी जी के सुविचार। धन्यवाद। **- संजू**

श्रीकृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है, जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण जी ने जन्म से मरणपर्य्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो, ऐसा नहीं लिखा।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती (सत्यार्थप्रकाश)

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पावन अवसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

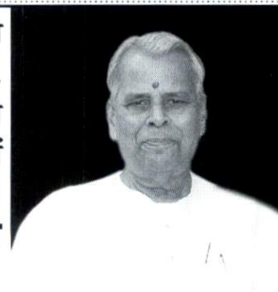

मिठाईलाल सिंह
न्यासी

गौहत्या पर प्रतिबन्ध के विरोध में दिए जा रहे कुतर्कों की समीक्षा

केंद्र सरकार द्वारा गौ हत्या पर पाबन्दी लगाने एवं कठोर सजा देने के निर्देश पर मानो सेक्युलर जमात की नींद ही उड़ गई है। एक से बढ़कर एक कुतर्क गौ हत्या के समर्थन में कुतर्की दे रहे हैं। केरल में कुछ कांग्रेसी नेताओं ने सरेआम गौ वध कर अपने आपको सेक्युलर सिद्ध करने का प्रयास किया। हमारे देश में एक जमात है। इसके अनेक मुखौटे हैं। कभी यह बुद्धिजीवी, कभी मानवाधिकार कार्यकर्त्ता, कभी एक्टिविस्ट, कभी समाज सेवी, कभी पुरस्कार वापसी गैंग आदि के रूप में सामने आता है। गौहत्या के पक्ष में एक से बढ़कर एक कुतर्क दिए जा रहे हैं। इनके कुतर्कों की समीक्षा करने में मुझे बड़ा मजा आया। आप भी पढ़ें।

कुतर्क नं. १- गौ हत्या पर पाबन्दी से देश में लाखों व्यक्ति बेरोजगार हो जायेंगे जो मांस व्यापार से जुड़े हैं।

समीक्षा- गौ पालन भी अच्छा व्यवसाय है। इससे न केवल गौ का रक्षण होगा अपितु पीने के लिए जनता को लाभकारी दूध भी मिलेगा। ये व्यक्ति गौ पालन को अपना व्यवसाय बना सकते हैं। इससे न केवल धार्मिक सौहार्द बढ़ेगा अपितु सभी का कल्याण होगा।

कुतर्क नं. २- गौ मांस गरीबों का प्रोटीन है। प्रतिबन्ध से उनके स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव होगा।

समीक्षा- एक किलो गौ मांस १५० से २०० रुपये में मिलता है जबकि इतने रुपये में २ किलो दाल मिलती है। एक किलो गौमांस से केवल ४ व्यक्ति एक समय का भोजन कर सकते हैं जबकि २ किलो दाल में कम से कम १६-२० आदमी एक साथ भोजन कर सकते हैं। मांस से मिलने वाले प्रोटीन से पेट के कैंसर से लेकर अनेक बीमारियाँ होने का खतरा है जबकि शाकाहारी भोजन प्राकृतिक होने के कारण स्वास्थ्य के अनुकूल है, ऐसा वैज्ञानिक प्रयोगों से सिद्ध हुआ है।

कुतर्क नं. ३- गौ मांस पर प्रतिबन्ध अल्पसंख्यकों पर अत्याचार है क्यूँकि यह उनके भोजन का प्रमुख भाग है।

समीक्षा- मनुष्य स्वभाव से मांसाहारी नहीं अपितु शाकाहारी है। वह मांस से अधिक गौ का दूध ग्रहण करता है। इसलिए यह कहना कि गौ का मांस भोजन का प्रमुख भाग है एक कुतर्क मात्र है। एक गौ अपने जीवन में दूध द्वारा हजारों मनुष्यों की सेवा करती है, जबकि मनुष्य इतना बड़ा कृतघ्न है कि उसे सम्मान देने के स्थान पर कसाइयों से कटवा डालता है।

कुतर्क नं. ४- अगर गौ मांस पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो बूढ़ी एवं दूध न देनी वाली गौएँ जमीन पर उगने वाली सारी घास को खा जाएँगी जिससे लोगों को घास भी नसीब न होगी।

समीक्षा- गौ घास खाने के साथ-साथ गोबर के रूप में प्राकृतिक खाद भी देती है। जिससे जमीन की न केवल उर्वरा शक्ति बढ़ती है अपितु प्राकृतिक होने के कारण उसका कोई दुष्परिणाम नहीं है। प्राकृतिक गोबर की खाद डालने से न केवल धन बचता है साथ में ऐसी फसलों में कीड़ा भी कम लगता है, जिनमें प्राकृतिक खाद का प्रयोग होता है। इस कारण से महंगे कीटनाशकों की भी बचत होती है। साथ में विदेश से महंगी रासायनिक खाद का आयात भी नहीं करना पड़ता। बूढ़ी एवं दूध न देनी वाली गौ को प्राकृतिक खाद के स्रोत्र के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

कुतर्क नं. ५- गौहत्या पर प्रतिबन्ध अल्पसंख्यकों के अधिकारों का अतिक्रमण है।

समीक्षा- बहुसंख्यक के अधिकारों का भी कभी ख्याल रखा जाना चाहिए। इस देश में बहुसंख्यक भी रहते हैं। गौरक्षा से अगर बहुसंख्यक समाज प्रसन्न होता है तो उसमें बुराई क्या है।

कुतर्क नं. ६- गौहत्या करने वाले को १० वर्ष की सजा का प्रावधान है जबकि बलात्कारी को ७ वर्ष का दंड है। क्या गौ एक नारी के शील से अधिक महत्वपूर्ण हो गई?

समाधान- हम तो बलात्कारी को उम्रकैद से लेकर फाँसी की

सजा देने की बात करते हैं। आप लोग ही कटोरा लेकर उनके लिए मानव अधिकार के नाम पर माफी देने की बात करते हैं। मानव अधिकार के नाम पर रोना एवं फाँसी पर प्रतिबन्ध की माँग आप सेक्युलर लोगों का ही सबसे बड़ा ड्रामा है।

कुतर्क नं. ७- गौहत्या के व्यापार में हिन्दू भी शामिल हैं।

समाधान- गौहत्या करने वाला हत्यारा है। वह हिन्दू या मुसलमान नहीं है। पैसों के लालच में अपनी माँ को जो मार डाले वह हत्यारा या कातिल कहलाता है नाकि हिन्दू या मुसलमान। सबसे अधिक गोमांस का निर्यात मुस्लिम देशों को होता है। इससे हमारे देश के बच्चे तो दूध के लिए तरस जाते हैं और हमारे यहाँ का प्राकृतिक संतुलन बिगड़ता है। इन कसाईयों की योजना हरे भरे भारत देश को रेगिस्तानी देश बनाना है।

समाधान- यह वैज्ञानिक तथ्य है कि मांस भक्षण के लिए लाखों लीटर पानी बर्बाद होता है। जिससे पर्यावरण की हानि होती है। साथ में पशुओं को मांस के लिए मोटा करने के चक्कर में बड़ी मात्रा में तिलहन खिलाया जाता है। जिससे खाद्य पदार्थों का अनुचित दोहन होता है। शाकाहार पर्यावरण के अनुकूल है और मांसाहार पर्यावरण के प्रतिकूल है। कभी पर्यावरण वैज्ञानिकों का कथन भी पढ़ लिया करो?

कुतर्क नं. १०- गौमांस पर प्रतिबन्ध भोजन की स्वतंत्रता पर आघात है। हम क्या खायें क्या न खायें आप कौन होते हैं यह सुनिश्चित करने वाले?

समाधान- मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्र है मगर सामाजिक नियम का पालन करने के लिए परतंत्र है। एक उदाहरण लीजिये आप सड़क पर जब कार चलाते हैं तब आप यातायात के सभी नियमों का पालन नहीं करेंगे तो

कुतर्क नं. ८- अगर गौ से इतना ही प्रेम है तो उसे सड़कों पर क्यों छोड़ देते हैं?

समाधान- प्राचीन काल में राजा लोग गौ को संरक्षण देने के लिए गौशाला आदि का प्रबन्ध करते थे जबकि आज की सरकारें सहयोग के स्थान पर गौ मांस के निर्यात पर सब्सिडी देती हैं। विडंबना देखिये मुर्दों के लिए बड़े-बड़े कब्रिस्तान बनाने एवं उनकी चारदीवारी करने के लिए सरकार अनुदान देती है, जबकि जीवित गौ के लिए गौचर भूमि एवं चारा तक उपलब्ध नहीं करवाती। अगर हर शहर के समीप गौचर की भूमि एवं चारा उपलब्ध करवाया जाये तो कोई भी गौ सड़कों पर न घूमे। खेद है हमारे देश में अल्पसंख्यकों को लुभाने के चक्कर में मुर्दों की गौ माता से ज्यादा औकात बना दी गई है। गाँवों आदि में पशुओं के चरने के लिए जो गोचर भूमि होती थी या तो उस पर अवैध कब्जा हो गया अथवा खेती की जाने लगी। उस भूमि को दबंगों से खाली करवाकर गौ के चरने के लिए प्रयोग किया जाता तो गौ सड़कों पर नहीं घूमती।

कुतर्क नं. ९- गौ पालन से ग्रीन हाउस गैस निकलती है जिससे पर्यावरण की हानि होती है।

दुर्घटना हो जाएगी। आप कभी कार को उलटी दिशा में नहीं चलाते और न ही कहीं पर भी रोक देते हैं अन्यथा यातायात रुक जायेगा। **यह नियम पालन मनुष्य की स्वतंत्रता पर आघात नहीं है अपितु समाज के कल्याण का मार्ग है। इसी नियम से भोजन की स्वतंत्रता का अर्थ दूसरे व्यक्ति की मान्यताओं को समुचित सम्मान देते हुए भोजन ग्रहण करना है।** जिस कार्य से समाज में दूरियाँ, मनमुटाव, तनाव आदि पैदा हो उस कार्य को समाज हित में न करना चाहिये। जो आप सोचें वह सदा ठीक हो ऐसा कभी नहीं होता।

कुतर्क नं. ११- प्राचीन काल में गौ की यज्ञों में बलि दी जाती थी और वेदों में भी इसका वर्णन मिलता है।

समाधान- इस भ्रान्ति के होने के मुख्य-मुख्य कुछ कारण हैं। सर्वप्रथम तो पाश्चात्य विद्वानों जैसे मैक्समूलर, ग्रिफिथ आदि द्वारा यज्ञों में पशुबलि, मांसाहार आदि का विधान मानना, द्वितीय मध्यकाल के आचार्यों जैसे सायण, महीधर आदि का यज्ञों में पशुबलि का समर्थन करना, तीसरा ईसाईयों, मुसलमानों आदि द्वारा मांस भक्षण के समर्थन में वेदों की साक्षी देना, चौथा साम्यवादी अथवा नास्तिक विचारधारा के समर्थकों द्वारा सुनी-सुनाई बातों को बिना

जाँचे बार-बार दोहराते रहना।

अनेक वेद मन्त्रों में किसी भी प्राणि को मारकर खाने का स्पष्ट निषेध किया गया है। जैसे हे मनुष्यो! **जो गौ आदि पशु हैं वे कभी भी हिंसा करने योग्य नहीं हैं।** - यजुर्वेद १/१

जो लोग परमात्मा के सहचरी प्राणी मात्र को अपनी आत्मा के तुल्य जानते हैं अर्थात् जैसे अपना हित चाहते हैं वैसे ही अन्यों में भी वर्तते हैं। - यजुर्वेद ४०/७

हे दाँतों तुम चावल खाओ, जौ खाओ, उड़द खाओ और तिल खाओ। तुम्हारे लिए यही रमणीय भोज्य पदार्थों का भाग है। तुम किसी भी नर और मादा की कभी हिंसा मत करो।

- अथर्ववेद ६/१४०/२

वह लोग जो नर और मादा, तरुण और अण्डों के नाश से उपलब्ध हुए मांस को कच्चा या पकाकर खाते हैं, हमें उनका विरोध करना चाहिए। - अथर्ववेद ८/६/२३

वेद में कहा है- निर्दोषों को मारना निश्चित ही महापाप है। हमारे गाय, घोड़े और पुरुषों को मत मार। - अथर्ववेद १०/१/२९

इन मन्त्रों में स्पष्ट रूप से यह सन्देश दिया गया है कि वेदों के अनुसार मांस भक्षण निषेध है।

डॉ. विवेक आर्य

इन कुतर्कों का मुख्य उद्देश्य युवा मस्तिष्कों को भ्रमित करना है। अतः सच्चाई सामने लाने हेतु यह आलेख है।

□□□

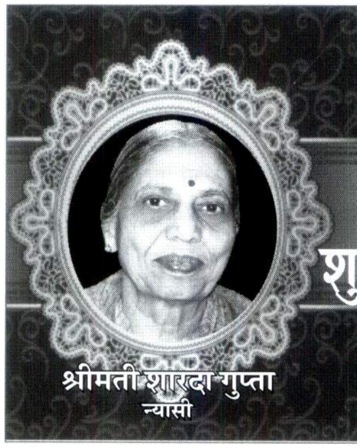

श्रीमती शारदा गुप्ता
न्यासी

श्रावणी उपाकर्म पर्व

हार्दिक शुभकामनाएँ

रक्षा बन्धन पर्व

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए.

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सत्कर्मों से सुख मिलता है,
पूरे होते सारे काम।
सत्कर्मों से यश बढ़ता है,
चहुँओर होता है नाम॥

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

निष्काम भाव से कर्मरत रहने का नाम ही योग है

हम अपने बनाए मंदिरों को साफ-सुथरा रखते हैं, उनमें धूप-दीप जलाते हैं, उन्हें सुगंधित रखते हैं। लेकिन कैसा आश्चर्य है कि ईश्वर की बनायी **'अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पुरयोध्या'** अर्थात् आठ चक्र और नौ दरवाजों वाली अयोध्या नगरी में यानी अपने शरीररूपी मानव मंदिर में हम शराब, मांस, अंडे, भांग, बीड़ी सिगरेट का धुआं सब कुछ डालते हैं। जीवन कला के अभ्यासी को आहार शुद्धि का विचार करते हुए यह भी ध्यान रखना है कि हमारी कमाई भी शुद्ध और सात्विक हो, उसमें कर्मचारियों का रक्त नहीं सना हो।

सामान्यतया समझा जाता है कि योग का अर्थ अग्नि या सूर्य के समक्ष महीनों/वर्षों तपना है जबकि ऐसा नहीं होता। क्योंकि यदि तपना ही होता तो मोक्ष का अधिकारी पतंगा होता, जो दीपक पर अपने को स्वाहा कर देता है। न जल में वर्षों खड़े होने पर मोक्ष मिलता है, क्योंकि बगुला घंटों पानी में ध्यानमग्न खड़ा रहता है और मछली तो जल में ही उत्पन्न होती है तथा जीवन पर्यन्त जल में रहकर अंत में जल में समाधि लेती है। इसी प्रकार ठंडेश्वरी या मौनी बाबा का क्षणिक नाटक है। प्रदर्शन मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने तथा कुछ कमाने का चोखा धंधा है। योग का वास्तविक अर्थ है कि अपने वर्णाश्रम के अनुसार निष्काम भाव से कर्मरत रहना, वासनाओं की अग्नि में इन्द्रियों को तपाकर निर्विषय कर देना और जीवन संग्राम के समस्त दुःखों को प्रभु प्रसाद समझकर उनसे सम्पूर्ण पुरुषार्थ के साथ विशांक रूप में जूझते रहना। प्रायः समझा जाता है कि **'लोकोयं कर्म बंधनः'** अर्थात् कर्म लोक बंधन का कारण है। लेकिन योग इसके विपरीत हमें सिखाता है कि कर्म ही बंधन-मुक्ति का साधन है। अब प्रश्न है कि कौन सा कर्म है जो योग बन गया है, यज्ञ बन गया है। कर्म में यह कौशल कि वह यज्ञ बन जाये, यही योग है और यही जीवन कला है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि **'योगः कर्मसु कौशलम्'** अर्थात् कर्म में कौशल उसे यज्ञमय बना देता है, प्रभु से वियोग नहीं योग कराता है अथवा मिलाता है। इस प्रकार ज्ञान पूर्वक किए गए कर्म जब यज्ञ का रूप लेते हैं तो वही उपासना बन जाते हैं।

ज्ञान, कर्म और उपासना का यह त्रिवेणी संगम मानव का मोक्ष तीर्थ बन जाता है। कानों से हम भद्र सुनें, आँखों से भद्र देखें, धरती को मधुरता से सींचने के लिए शहद जैसे मीठे और हितकारी भद्र वचन कहें। मस्तिष्क से भद्र चिंतन, हाथों से भद्र कर्म और पाँवों से भद्र चलन करें तब होगा हमारा आत्मयज्ञ। इसी को वेद माता ने षड्योग भी कहा है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में इसे समत्वयोग कहा है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्जुन! संसार के सारे दुःख संग के कारण हैं। योग और कुछ नहीं है कर्म करते हुए सिद्धि-असिद्धि में समभाव बनाए रखना, परमात्मा के साथ युक्त रहना, अपने को उसी के हाथों में देना ही योग है। वहीं हमारे भीतर के शत्रु काम, क्रोध, लालच, लालसा, झूठ, बेईमानी, दुराचार आदि हैं। मनुष्य कितने ही आविष्कार क्यों न कर ले, कितना ही बड़ा साम्राज्य क्यों न खड़ा कर ले लेकिन जब तक उसके भीतर ये शत्रु बैठे हैं तब तक बाहर की जीत, जीत नहीं हार है। क्योंकि जितना ही वह लालच और लालसा, झूठ और बेईमानी से बाहर का सामान जुटाता जाएगा उतना ही उसका लालच, उसकी लालसा, उसकी बेईमानी, उसकी दूसरों का खून पीने की प्यास बढ़ती जाएगी। जीत तो तभी होगी जब जिस प्यास को बुझाने तुम निकले हो, वह प्यास बुझ जाएगी। क्या सिकंदर की प्यास बुझी? क्या नेपोलियन की प्यास बुझी? क्या हिटलर और मुसोलिनी की प्यास बुझी? यह सब अपनी लालसा की प्यास में ही डूब गये। प्रश्न है कि क्या कोई ऐसा रास्ता है जिससे मनुष्य के भीतर के इन शत्रुओं से जीता जा सके? इसका उत्तर भारत की संस्कृति के पास है। वह है योग दर्शन के रचयिता पतंजलि मुनि के पाँच यम। अपने तथा मानव समाज के जीवन के भवन को वैदिक संस्कृति के उन पाँच आधार स्तंभों पर खड़ा कर देना, जिनकी नींव पाताल तक तथा चोटी हिमालय के शिखर तक चली गई है, यह पाँच यम हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हीं को योग भी कहा गया है। योग का अर्थ अपने को संपूर्ण रुप से मानव-देव-ऋषि बनाना है और इसका साधन प्रभु के मंदिर मानव शरीर की एक-एक इन्द्रियों को उपयोगी बनाना है।

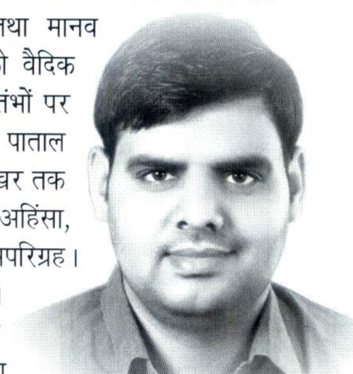

□□□

- विवेक प्रिय आर्य
मथुरा, उत्तर प्रदेश
चलभाष-०९७१९९१०५५७

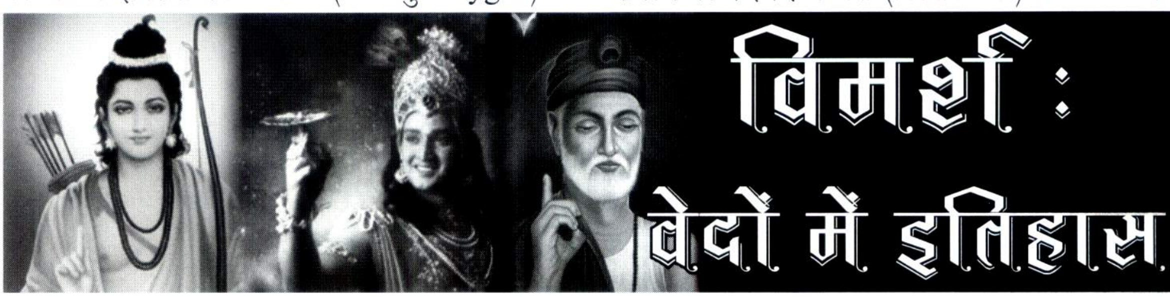

प्रश्न - जब ईश्वर ने वेदों में सारा ज्ञान दे दिया है तो फिर वेदों में इतिहास क्यों नहीं ?.

पहले प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर-

क्या वेद में इतिहास है ? - जी हाँ ! वेद में इतिहास है।

क्या वेद में इतिहास है ?- जी नहीं ! वेद में इतिहास नहीं है।

उपर्युक्त उत्तर पढ़कर पाठक विचार करेंगे कि एक ही प्रश्न के दो उत्तर कैसे हो सकते हैं? तो उत्तर के सामने ..... इतिहास कौन सा है और कौन सा इतिहास नहीं है इस अन्तर को जब तक नहीं समझेंगे तब तक उत्तर नहीं मिलेगा।

इतिहास दो प्रकार के होते हैं। (१) नित्य इतिहास (२) अनित्य इतिहास

१)नित्य-इतिहास का अर्थ होता है सृष्टि उत्पत्ति का इतिहास या पदार्थ का इतिहास। सृष्टि कैसे उत्पन्न हुई, सृष्टि उत्पत्ति का क्रम क्या था/है आदि का वर्णन नित्य इतिहास में आता है और वह वेद में दिया हुआ है इसलिए यह कहना सही है कि वेद में इतिहास है। ओषजन (प्राणवायु=oxygen) के एक और हाइड्रोजन के दो तत्त्व मिलने पर पानी=H_2O बनता है और यह सूत्र/फार्मूला नित्य इतिहास है। वर्तमान सृष्टि में और अगली या पिछली सृष्टि में यह सामान्य रहेगा। आग जलाने पर गर्मी लगती है यह नित्य इतिहास है।

२)अनित्य-इतिहास- इसमें राजाओं, स्थान-विशेष, घटना-विशेष का इतिहास आता है जो कि अनित्य है। इस सृष्टि में घटी घटना अगली सृष्टि में नहीं होगी या उसका स्वरुप अलग ही होगा। **इस अनित्य इतिहास का वर्णन वेद में नहीं है।**

नित्य-अनित्य इतिहास के अन्तर को समझने के बाद भी यदि कोई व्यक्ति 'अनित्य-इतिहास' को वेद में मानता ही हो तो उसे सामने से प्रश्न करना चाहिए कि आप वेद में कब तक का, किस काल-खण्ड तक का इतिहास मानते हैं? इस प्रश्न के सामने या तो व्यक्ति निरुत्तर हो जाता है अथवा किसी काल-खण्ड विशेष की बात कर देगा और बतायेगा कि कुछ हजार वर्ष पूर्व ही वेद की रचना की गयी, सिन्धु नदी के तट पर विविध ऋषियों के काव्यों का संग्रह है आदि-आदि।

उस व्यक्ति से यदि हम इसका आधार पूछेंगे तो वह बतायेगा कि देखो वेद में मनुस्मृति के प्रवचनकार मनु का उल्लेख है,. या वेद में ऋषभ-देव जी का नाम आया है जो कि प्रथम जैन-तीर्थंकर थे, या दूसरा व्यक्ति कहेगा कि देखो श्री-कृष्ण या राम आदि का नाम वेद में आता है, कुछ व्यक्ति ईसा-मसीह का नाम यजुर्वेद के अन्तिम अध्याय (४०वें) के प्रथम मन्त्र में दिखा देते हैं, कोई व्यक्ति **यजुर्वेद ४०/८** में कबीर को बतला देता है। कुछ लोग वेद में मदीना और कलमा भी दिखा देते हैं।

ऐसी दुविधापूर्ण स्थिति में सामान्य व्यक्ति के लिए निर्णय कर पाना कठिन हो जाता है लेकिन विवेकशील व्यक्ति जानता है कि वेद में नित्य-इतिहास ही है, अनित्य इतिहास का वर्णन नहीं अतः उपर्युक्त पुरुषों के नाम वेद में होते हुए भी ये सब ध्वनि-साम्य होने से महत्त्व के नहीं हैं, ऐतिहासिक नहीं हैं। इस बात को एक उदाहरण से समझते हैं-

ऋग्वेद के मंत्र १/६७/३ में मेरा (विश्वप्रिय का) नाम आया है। क्या इसका मतलब मैं वेदकालीन हूँ? या ईश्वर ने मेरी घोषणा कर दी थी की एक 'विश्वप्रिय' आयेगा और वेदानुरागी बन सबको वेद मंत्र पढ़वायेगा?

निम्न मंत्र देखिये -

अजो न क्षां दाधार पृथिवीं तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः।
'प्रिया' पदानि पश्वो नि पाहि 'विश्वायुरग्ने' गुहा गुहं गाः।।

इस मंत्र में विश्व और प्रिय दोनों पद हैं।

जैसे कहते हैं कि स्वार्थी दोष नहीं देखता उसी नियम अनुसार मुझे इस वेद-मन्त्र का क्या अर्थ है उससे कोई मतलब नहीं है लेकिन मेरा नाम वेद में है अतः मैं वेदकालीन हूँ या वेद की रचना मेरे जन्म, नामकरण-संस्कार के बाद हुई है यह निश्चित है।

अगर वेद में से ईसा, कबीर, मदीना, ऋषभदेव आदि सब सिद्ध किये जा सकते हैं तो विश्वप्रिय का नाम क्यों नहीं?

या तो शान्ति से मेरा नाम वेद में है ये मान लें और कहें कि मैं वेदकालीन हूँ या कहें की वेदों में इतिहास नहीं है।

सच्चाई यह है कि मेरा नाम वेद में से लिया गया है।
आखिर मनुस्मृति में कहा है

सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।। - मनु. १/२१

मनुस्मृति के श्लोक के अनुसार 'संसार की सारी वस्तुओं के नाम, कर्मों के नाम के मूल-आदि-स्रोत वेद हैं।'

अतः अपनी जिद्द या अज्ञानता, कुतर्क को त्याग कर सत्य को स्वीकार करना ही उचित है और कहना चाहिए की **वेद में नित्य इतिहास ही है, अनित्य इतिहास नहीं है।**

❑❑❑

- विश्वप्रिय वेदानुरागी

जियो और जीने दो

कथा सरित

मगध के सम्राट् श्रेणिक ने एक बार अपनी राज्य-सभा में पूछा कि- 'देश की खाद्य समस्या को सुलझाने के लिए सबसे सस्ती वस्तु क्या है?'
मंत्रि-परिषद् तथा अन्य सदस्य सोच में पड़ गये। चावल, गेहूँ, आदि पदार्थ तो बहुत श्रम बाद मिलते हैं और वह भी तब, जबकि प्रकृति का प्रकोप न हो। ऐसी हालत में अन्न तो सस्ता हो नहीं सकता। शिकार का शौक पालने वाले एक अधिकारी ने सोचा कि मांस ही ऐसी चीज है, जिसे बिना कुछ खर्च किये प्राप्त किया जा सकता है।
उसने मुस्कराते हुए कहा-
'राजन! सबसे सस्ता खाद्य पदार्थ तो मांस है। इसे पाने में पैसा नहीं लगता और पौष्टिक वस्तु खाने को मिल जाती है।'
सबने इसका समर्थन किया, लेकिन मगध का प्रधान मंत्री अभय कुमार चुप रहा।
श्रेणिक ने उससे कहा, 'तुम चुप क्यों हो? बोलो, तुम्हारा इस बारे में क्या मत है?'
प्रधान मंत्री ने कहा, 'यह कथन कि मांस सबसे सस्ता है, एकदम गलत है। मैं अपने विचार आपके समक्ष कल रखूँगा।'
रात होने पर प्रधानमंत्री सीधे उस सामन्त के महल पर पहुँचे, जिसने सबसे पहले अपना प्रस्ताव रखा था।
अभय ने द्वार खटखटाया। सामन्त ने द्वार खोला। इतनी रात गये प्रधान मंत्री को देखकर वह घबरा गया। उनका स्वागत करते हुए उसने आने का कारण पूछा।
प्रधानमंत्री ने कहा -
'संध्या को महाराज श्रेणिक बीमार हो गए हैं। उनकी हालत खराब है। राजवैद्य ने उपाय बताया है कि किसी बड़े आदमी के हृदय का दो तोला मांस मिल जाय तो राजा के प्राण बच सकते हैं। आप महाराज के विश्वास-पात्र सामन्त हैं। इसलिए मैं आपके पास आपके हृदय का दो तोला मांस लेने आया हूँ। इसके लिए आप जो भी मूल्य लेना चाहें, ले सकते हैं। कहें तो लाख स्वर्ण मुद्राएँ दे सकता हूँ।' यह सुनते ही सामन्त के चेहरे का रंग फीका पड़ गया। वह सोचने लगा कि जब जीवन ही नहीं रहेगा, तब लाख स्वर्ण मुद्राएँ भी किस काम आएँगी!
उसने प्रधान मंत्री के पैर पकड़ कर माफी चाही और अपनी तिजोरी से एक लाख स्वर्ण मुद्राएँ देकर कहा कि इस धन से वह किसी और सामन्त के हृदय का मांस खरीद लें।
मुद्राएँ लेकर प्रधानमंत्री बारी-बारी से सभी सामन्तों के द्वार पर पहुँचे और सबसे राजा के लिए हृदय का दो तोला मांस माँगा, लेकिन कोई भी राजी न हुआ। सबने अपने बचाव के लिए प्रधानमंत्री को एक लाख, दो लाख और किसी ने पाँच लाख स्वर्ण मुद्राएँ दे दीं। इस प्रकार एक करोड़ से ऊपर स्वर्ण मुद्राओं का संग्रह कर प्रधानमंत्री सवेरा होने से पहले अपने महल पहुँच गए और समय पर राजसभा में। प्रधानमंत्री ने राजा के समक्ष एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ रख दीं।
श्रेणिक ने पूछा, 'ये मुद्राएँ किसलिए हैं?'
प्रधानमंत्री ने सारा हाल कह सुनाया और बोले -
'दो तोला मांस खरीदने के लिए इतनी धनराशी इक्कट्ठी हो गई किन्तु फिर भी दो तोला मांस नहीं मिला। अपनी जान बचाने के लिए सामन्तों ने ये मुद्राएँ दी हैं। अब आप सोच सकते हैं कि मांस कितना सस्ता है?'
जीवन का मूल्य अनन्त है। हम यह न भूलें कि जिस तरह हमें अपनी जान प्यारी होती है, उसी तरह सभी जीवों को अपनी जान प्यारी होती है ।

❑❑❑

साभार- हितोपदेशक

झूठा इतिहास और आजादी का सच

दृष्टिकोण

यह झूठ है कि आजादी गाँधी-नेहरु के घोर संघर्ष के बाद मिली। सच तो यह है कि अंग्रेजों ने अपने जर्जर हालात से तंग आकर हमें देश के तीन टुकड़े कर ऐसी मनमर्जी दिखायी मानो हमें भीख में आजादी दे दी। इतिहास के पन्ने गवाह हैं और यह प्रश्न हमेशा खड़ा करते रहेंगे कि, आजादी के लिए महात्मा गाँधी और नेहरु ने क्या बलिदान दिया? क्यों भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस, हेमू कलाणी और न जाने कितने ही अन्य क्रांतिकारी फांसी के तख्ते पर झूल गए या चंद्रशेखर आजाद जैसे अनेक भारत माँ के लाल अंग्रेजों की गोलियों का शिकार बने? हमें अधूरे और कई बार झूठे पढ़ाये जाने वाले इतिहास ने कभी खुलकर नहीं बताया कि, नेताजी सुभाषचंद्र बोस की योजना क्या थी? पाकिस्तान की परिकल्पना वास्तव में किसने की थी? और क्यों जन्मा एक नाजायज देश, किसे जरुरत थी इसकी? कैसे खींची गई बंद कमरे में हिन्दुस्तान के विभाजन की रेखाएँ? २ जून १९४७ को बंद कमरे में कथित आजादी की तारीख तय करने में कैसे षड्यंत्र रचा गया? ऐन वक्त पर गाँधीजी क्यों ले लेते थे 'मौन व्रत'? आखिर कैसे हुआ भारत देश आजाद? इन तमाम सवालों के जवाबों की एक ऐसी हकीकत को हम यहाँ प्रस्तुत करने जा रहे हैं, जो इतिहास के पन्नों से निकल करोड़ों भारतीयों की आँखें खोलने में सहायक होगी।

ब्रिटेन की जर्जर हालत

द्वितीय महायुद्ध में इतिहास के सबसे विकट युद्ध में इंग्लैंड ने विजय तो हासिल कर ली, लेकिन इस युद्ध में उसके सारे उद्योग धंधे चौपट हो गये और उसका सरकारी खजाना खाली हो गया। १९४७ के पूर्व के ७-८ सालों में इंग्लैंड में हर वस्तु की आपूर्ति विषम हो गयी थी। भोजन, ईंधन, जूते, कपड़े, शराब, बिजली आदि सब राशन से मिल रहे थे। अंग्रेजों ने साथियों के सहयोग से दबंग हिटलर को हटाया था, उनका नारा था 'वी फार विक्ट्री और थम्स अप' अब उन्हीं अंग्रजों का नारा था 'भूखों मरो थरथर काँपो'।

युद्ध से कंगाल हो गई ब्रिटिश हुकूमत की अब औकात ही नहीं बची थी कि वह भारत जैसा विशाल उपनिवेश अपने कब्जे में रख सके। १९४२ से ४७ के बीच जब गाँधी-नेहरु और कांग्रेस के सारे कथित आन्दोलन दिशाहीन साबित हो रहे थे, गाँधी का कथित सत्याग्रह लोगों को उबाने लगा था। गाँधी बार-बार आमरण अनशन करते, हालाँकि उन्हें हुआ कुछ नहीं, देश के उत्कृष्ट क्रांतिकारी या तो फांसियों पर झूल मरे थे, या गोलियों का शिकार हो चुके या जेलों में थे। कम से कम गाँधी-नेहरु इस स्थिति में कतई नहीं थे। गाँधी कांग्रेस के भीतर ही उपेक्षित एकाकी और कटे-कटे से माने जाने लगे थे।

नेता जी और जापान का भय

चर्चिल जिस विशाल उपनिवेश की कड़ी आंतरिक सुरक्षा की तैयारी कर रहा था, इटली उसे क्यों आजादी दे रहा था? पहला कारण, युद्ध के बाद पस्त ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति और दूसरा मार्च १९४२ में जापान की शाही फौज, भारत के इतने नजदीक आ गई कि उसका आक्रमण कभी भी हो सकता था। यह आक्रमण, दरअसल भारत पर नहीं, बल्कि भारत में डटे अंग्रेजों पर होना था। अंग्रेजों को डर था यदि भारतीय सैनिकों ने जापान में गठित नेताजी सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज और जापानी सेना का साथ दिया तो,

टिकना मुश्किल हो जायेगा। रेडियो बर्लिन और टोकियो की दहाड़ से हुकूमत के गोरे नुमाइंदों की पतलूनें गीली हो रही थीं। **चर्चिल ने तब पहली बार नर्म रुख अपनाया था। कांग्रेसी नेताओं से उसने सक्रिय सहयोग माँगा और वचन दिया कि जापानियों को हटाने के बाद भारत को आजादी दे दी जाएगी और उस समय मुस्लिम लीग की माँग को भी**

स्वीकारा। साढ़े चार पृष्ठों में रहमत अली की लिखी पाकिस्तान परिकल्पना को स्वीकारोक्ति दे दी कि, मुसलमानों को उनका स्वतंत्र देश, भारत भूमि में से ही काटकर अलग दिया जाना चाहिए।

जिन्ना का अलग पाकिस्तान

मुस्लिम लीग के प्रस्ताव के अंत में साफ लिखा गया था कि, 'हिन्दूराष्ट्रीयता की सलीब पर हम खुदकुशी नहीं करेंगे।' जिस सभा में जिन्ना ने पहले कभी पाकिस्तान के प्रस्ताव को मूर्खतापूर्ण करार दिया अब उसी जिन्ना ने गाँधी की अदूरदर्शिता , साम्प्रदायिकता, तुष्टीकरण और कठमुल्लों की चिचौरी की नीतियों से क्षुब्ध, चिढ़कर पाकिस्तान का झंडा उठा लिया। कोई ईमानदार इतिहासकार इस बात से इंकार नहीं कर सकता कि उन दिनों भारत के इतिहास की चाबी न तो गाँधी के हाथ थी, और न ही नेहरु के हाथ में या किसी और के। वह केवल जिन्ना के हाथ में थी। जिन्ना मुसलमानों का मसीहा था जिद्दी, ठंडा और क्रूर। उस जिन्ना ने नेहरु और उसके पक्ष में खड़े गाँधी से क्षुब्ध होकर भारत माँ के तीन हिस्सों के विभाजन में से दो हिस्सा यानी पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान बनवाकर अपना नाम इतिहास के पन्नों में अमर करवा लिया। **अगस्त १६४६ में 'डायरेक्ट एक्शन'**

के समय जिन्ना ने कसम खायी थी- 'हम भारत को बाँटकर रहेंगे या फिर हम इसे नष्ट कर देंगे।' पाकिस्तान बनाकर ब्रिटेन कभी भी भारत की चौखट तक पहुँच सकता था। (क्या सचमुच आज ब्रिटेन की सोच सही साबित हो रही है?) इंग्लैंड ने तय किया, भारत को विखंडित कर उसे उसके नेताओं के हवाले कर दिया जाये। इसके लिए लार्ड माउंट बेटेन को भारत का वाइसराय बनाकर भारत भेजा गया। **माउंट बेटेन के बारे में उसके विरोधी भी कहते थे- वह एक ऐसा व्यक्ति था, जो अपने आकर्षण से गिद्ध को भी लाश से उतरने पर मजबूर कर सकता था।**

विभाजन की क्रूरता

पूर्व वाइसराय लार्ड वैवेल ने नए वाइसराय माउंट बेटेन को भारत की समस्याओं से संबंधित जो फाइल सौंपी थी, उस पर दर्ज था ऑपरेशन मैड हाउस (पागलखाने का अभियान)। ऑपरेशन मैड हाउस की फाइल पर माउंट बेटेन ने दर्ज कराया 'ऑपरेशन सिडक्शन' या वशीकरण अभियान। इसके प्रमुख संचालक, आखिरी वायसराय और नेहरु की प्रेमिका एडविना के पति माउंट बेटेन के आगे गाँधी, नेहरु एवं तथाकथित लौह पुरुष पटेल और पूरी कांग्रेस के नेता बेबस और लाचार नजर आए। वायसराय के अनुसार, नेहरु-जिन्ना को विभाजन की इतनी जल्दबाजी और जरुरी थी कि, जो रेखा जहाँ से भी खींच दी जायेगी दोनों को मंजूर थी लेकिन विलंब नहीं। इसी तरह इस काम के लिए जिन्हें नियुक्त किया गया था इंलैण्ड के बैरिस्टर और तब के भारतीय सेना के कमाण्डर इन चीफ सिंरिल रैडक्लिफ ने भी कहा था मुझे इस ऑपरेशन में औजारों के नहीं बूचड़खाने की कुल्हाड़े की जरुरत पड़ेगी।

बंद कमरे में षड्यंत्र

२ जून, १६४७ सुबह के समय भारत का बंटवारा तय करने सात बड़े कर्णधारों की मीटिंग हुयी। कांग्रेस की ओर से

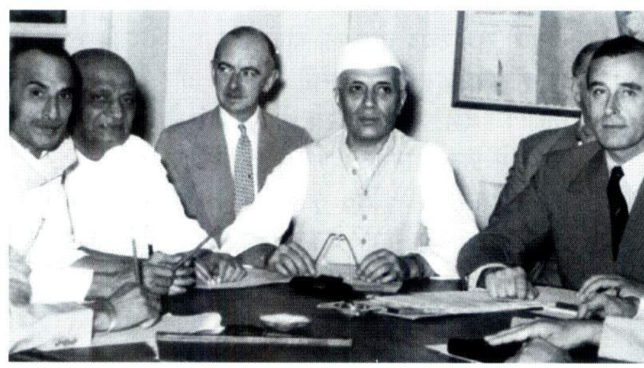

नेहरु, पटेल, अध्यक्ष कृपलानी, मुस्लिम लीग के जिन्ना, लियाकत अली खान और बलदेव सिंह। माउंट बेटेन ने बुलाया, तो सभी को चर्चा के लिए था, पर उसने तय कर रखा था कि वह जो कुछ कहेगा, अकेला कहेगा, क्योंकि सबको बोलने का मौका दिये जाने का मतलब था चीख-चिल्लाहट का अंतहीन सिलसिला। ऊँची आवाज में वाइसराय ने इन सातों को भारत विभाजन की रुपरेखा बताई और किसी को सुने बगैर यह कहते हुए बैठक समाप्त कर दी कि कल सुबह मैं आप लोगों से फिर मिलूँगा। आधी रात होते-होते आप सभी मुझे आश्वस्त कर दें कि आपने योजना को स्वीकार कर लिया है और निर्णय को सारी दुनिया में फैलाने के लिए ऑल इंडिया रेडियो से प्रसारित कर दें। और ३ जून १६४७ की शाम ७ बजे आल इंडिया रेडियो से सभी

प्रमुख नेताओं ने जनता को बता दिया कि भारतीय भूखंड को दो अलग-अलग स्वतंत्र राष्ट्रों में बाँटने का पारंपरिक समझौता उन्होंने कर लिया है। नेहरु ने अपील की कि देशवासी इस योजना को शांतिपूर्वक स्वीकार कर लें।

विभाजन का गुनहगार कौन ?

इस नाम की अपनी पुस्तक में डॉ. राम मनोहिया लोहिया लिखते हैं- 'भारत विभाजन के पापकर्म से जिन लोगों की आत्मा भस्म हो जानी चाहिए थी, वे अपनी अपकीर्ति के मवाद में कीटाणुओं की तरह आनन्द ले रहे थे।'

वाह गाँधीजी !आपका मौनव्रत।

उसी शाम को प्रार्थना सभा में गाँधी गरज रहे थे, 'देश अगर धूं-धूकर जलने लगता है तो भी पाकिस्तान के नाम पर एक इंच भी भूमि हम नहीं देंगे।' इससे पहले भी गाँधी जी कह चुके थे कि 'पाकिस्तान मेरी लाश पर से ही बनेगा। पाकिस्तान बनाने से पहले मेरी लाश पर से गुजरना होगा।' लेकिन उसी २ जून १९४७ को दोपहर १२.३० बजे जब देश के सातों कथित कर्णधार वाइसराय से चर्चा कर लौट रहे थे, गाँधी जी ने वाइसराय के कक्ष में प्रवेश किया। वाइसराय को पता था कि गाँधी की आवाज पर सारा देश जाग उठेगा और गाँधी ने भारत विभाजन के खिलाफ आवाज उठाई, तो वह कभी भी देश का विभाजन नहीं करवा पायेगा। गाँधी का सत्याग्रह, उपवास उसके सारे किये धरे पर पानी फेर देगा। इसलिये अत्यंत ही आशंकित मुद्रा में वाइसराय ने अपने कक्ष में गाँधी का स्वागत करने आगे कदम बढाये, पर यह क्या? गाँधी ने अपना दाहिना हाथ उठाकर होंठों पर एक अँगुली इस प्रकार रख ली मानो कोई माँ अपने बच्चे को चुप कराना चाहती हो। वाइसराय को यह स्थिति अत्यन्त मसखरीपूर्ण लगी, लेकिन सहसा ही वाइसराय को याद आया- थैंक्स गॉड, आज महात्मा गाँधी का मौन व्रत है। उस दिन सोमवार था, जो आवाज सारे भारत वर्ष को वाइसराय के खिलाफ

खड़ा कर सकती थी, उस दिन खामोश रहने वाली थी। गाँधी वर्षों से सोमवार को मौन व्रत का पालन करते आ रहे थे, ताकि गले को थोड़ा आराम मिल सके। जब भारत माता के सीने में खंजर घोंपा जा रहा था, जब अपने अब तक के इतिहास के सबसे भयानक और निर्णायक मोड़ से विश्व का यह प्राचीनतम राष्ट्र खंडित हो रहा था, तब यह महापुरुष अपने गले को आराम दे रहे थे। ४ जून शाम की प्रार्थना सभा में अधिकांश लोग प्रार्थना करने नहीं, बल्कि उस अहिंसा के पुजारी से यह सुनने की आशा लेकर आये थे कि, अहिंसा के इस पुजारी द्वारा यह अपील की जाएगी कि भारत

माँ के टुकड़े होने से बचाने के लिए एकजुट होकर सार्थक प्रयास करें, लेकिन गोड़से की गोलियों से छलनी होने से पहले उनकी उस दिन की रहस्यमय मौन चुप्पी ही उनकी मौत के कारणों में से एक बनी। वाइसराय का 'ऑपरेशन सिडक्शन' सफल हो चुका था, इस सच्चाई को महसूस कर अखंड भारत माता से प्यार करने वाला कोई भी सच्चा सपूत राष्ट्रपिता के प्रति वास्तव में सम्मान करता रहेगा?

अंग्रेजों ने तारीख तय की

अंग्रेज अधिकारी ओ.ए.ह्यूम की पैदा की हुई जो कांग्रेस आज यह दंभ भरती है कि आजादी उनके नेताओं द्वारा दिलवाई गई है उनके उन कथित नेताओं को सन् ४७ की जून के पहले सप्ताह तक क्या पता था कि, आजादी कब और कैसे मिलेगी? कब्र में पैर लटकाये बूढ़े हो चुके ये सत्तालोलुप नेता कभी-कभी आशंकित भी हो उठते कि क्या वाकई अंग्रेज डेरा छोड़कर जायेंगे भी? लड़कर आजादी हासिल प्राप्त करनेवाले किसी की दी तिथियों और कृपा के ये नेता हाथ में कटोरा लिये वाइसराय के ईर्दगिर्द दुम हिलाते फिर रहे थे कि, साहब बहादुर पता नहीं किस दिन हम पर कृपा करेंगे। अचानक देश-विदेश से दिल्ली पहुँचे पत्रकारों से खचाखच भरे पत्रकार सम्मेलन कक्ष में वाइसराय ने घोषणा कर सभी को चौंका दिया। भारतीय हाथों में सत्ता का अंतिम तबादला १५ अगस्त १९४७ को कर दिया। उपकृत कांग्रेस ने तय किया कि माउंटबेटेन को ही भारत का प्रथम गवर्नर बनाया जाये।

गद्दारों को मिला ईनाम

१५ अगस्त १६४७ को देश की हत्या कर दी गई। अखंड भारत के तीन टुकड़े कर दो टुकड़े जिन्ना के लिए और एक टुकड़े से नेहरु की सत्ता पिपासा शान्त की गई। पाकिस्तान मुसलमानों को चाहिए था या नहीं, यह सवाल दबा दिया गया। पाकिस्तान जिन्ना को चाहिए था सो मिल गया। और नेहरु का सत्ता का चस्का भी तृप्त हो गया। भारत को अंग्रेजों की इच्छा से मिली कथित आजादी, तीन टुकड़े होकर मिल गई। भारत माता के एक तिहाई विशाल भूखण्ड की बलि, लाखों बेगुनाहों का कत्लेआम और सवा करोड़ लोगों के बेघर होने के बाद नेहरु प्रधानमंत्री बनकर खुश थे। भारत माता के सीने पर खंजर घोंपने वाले षड्यंत्रकारियों की इच्छा से सत्ताधीश बने नेहरु जिसने माउंट बेटन की बीवी एडवीना को हस्तलिखित ३० किलो वजन तक के अनेक प्रेम पत्र लिखे और वह भी उस दौरान जब उस प्रेमिका का गवर्नर पति पूरी निर्दयता से भारत विभाजन व नरसंहार में अपनी भूमिका निभा रहा था। अधूरे और सत्ता के प्रभाव में लिखे गए झूठे इतिहास के पन्नों में भले ही इन कड़वी सच्चाईयों को ईमानदारी से नहीं प्रस्तुत किया जाता रहा है, लेकिन 'राष्ट्रबोध' द्वारा भारत माता के कपूतों का भयावह चेहरा राष्ट्रहित में पूरी ईमानदारी के साथ इस जनमंच के माध्यम से प्रबुद्ध जनता के समक्ष आगे भी प्रस्तुत किया जाता रहेगा, जिससे आजादी के लिए बलिदान शहीदों की कुर्बानियाँ व्यर्थ न जाएँ और बेईमान और सत्तालोलुप भ्रष्ट नेता बेनकाब हो सकें। {यह लेख राष्ट्रबोध की पत्रिका में जून २०११ page no- २-३ में प्रकाशित हुआ था}

❑❑❑

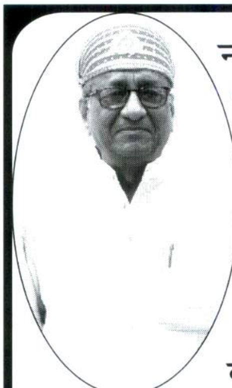

न्यास के परम हितैषी न्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय अग्रज श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य के ७६वें जन्मदिवस के शुभावसर पर न्यास व सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ।

-अशोक आर्य

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/१७

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (षष्ठ समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	ख १	■	२	ष्ट	२	२ स	२	■	■
३	सू ३	३	■	४ बु	४	■	५	५	त्य ५
■	६	क ६	■	७	प्त ७		७ रु	७	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो राजा सदा राज्य पालन में सब प्रकार तत्पर रहता है, उसको क्या सदा बढ़ता है?

२. किसमें फंसने से मर जाना अच्छा बताया गया है?

३. दोषों में गुण और गुणों में दोषारोपण करने को क्या कहा है?

४. एक की बुद्धि पर राज्य के कार्य का निर्भर रहना कैसा काम बताया गया है?

५. दण्डाधिकार किसे प्रदान किया गया है?

६. सत्यार्थप्रकाश के अनुसार राजा कितनी स्त्रियों से विवाह कर सकता है?

७. वार्षिक कर किनके द्वारा ग्रहण करे?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/१७ का सही उत्तर

१. राजधर्म	२. तीन	३. नहीं
४. धर्मयुक्त	५. सभाधीन	६. प्रजा
७. माननीय		८. तोप

"विस्तृत नियम पृष्ठ २५ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०१७

सिक्ता निवावरी

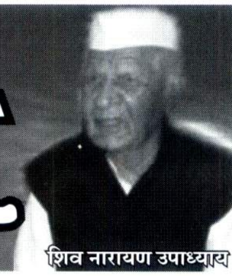

शिव नारायण उपाध्याय

सिक्ता निवावरी भी ऋग्वेद की ऋषिका है। ऋग्वेद मंडल ६ सूक्त ८६ की ऋचा संख्या २१-३० की वह दृष्टी है। सिक्ता निवावरी एक विज्ञान की ज्ञाता ऋषिका भी है। उसने सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय के विषय में भी विचार किया है। एक योगी के समान उसने चित्तवृत्ति निरोध की बात भी कही है। उसने ज्ञान को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। अब हम इन ऋचाओं में से कुछ ऋचाओं पर विचार कर देखेंगे कि उसका वेद का कितना गहन अध्ययन है।

अयं पुनान उषसो वि रोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत्।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः॥

पदार्थ- (अयं) यह परमात्मा अपनी शक्तियों से (पुनानः) पवित्र करता हुआ और (उषसः) उषा काल का (विरोचयत्) प्रकाश करता हुआ (सिन्धुभ्यः) स्यन्दनशील प्रकृति की सूक्ष्म तत्वों से (लोककृत्) संसार का करनेवाला (अभवत्) हुआ। (उ) यह दृढ़ता बोधक है। (अयं त्रिः सप्त) यह परमात्मा प्रकृति के २१ महत्तत्वादि तत्वों को (दुदुहानः) दोहन करता हुआ (आशिरम्) ऐश्वर्य को उत्पन्न करके (सोमः) यह जगदुत्पादक परमात्मा (चारुमत्सरः) जो अत्यन्त आह्लादक है वह (हृदये) हमारे हृदय में (पवते) पवित्रता प्रदान करता है।

अगले मंत्र में कहा गया है कि परमात्मा सूर्य, चन्द्रमा आदिकों का निर्माण करता हुआ इस विविध प्रकार की रचना का निर्माण करके प्रजा को उद्योगी बनाने के लिए कर्मयोगी की कर्माग्नि को प्रदीप्त करता है।

अब कर्मयोगी के विषय में ऋचा कहती है-

अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आँ इन्दयिन्द्रस्य जठरेष्वाविशन्।
त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप॥

पदार्थ- (इन्द्रो) हे प्रकाशस्वरूप परमात्मन्! आप (इन्द्रस्य) कर्मयोगी के कर्म प्रदीप्त (जठरेषु) अग्नि में (आविशन्) प्रवेश करते हुए (अद्रिभिः सुतः) वज्र से संस्कार किए हुए योगी को (पवसे) पवित्र करते हैं। (आ) और (पविते) उसके पवित्र अन्तःकरण में (अभवः) निवास करें। (नृचक्षाः) आप सर्व दृष्टा हो (विचक्षणः) तथा सर्वत्र हो (सोम) हे जगदुत्पादक! आप (अंङ्गिरोभ्यः) प्राणायाम आदि द्वारा (गोत्रं) कर्म योगी के शरीर की रक्षा करें और उसके विघ्नों को (अपावृणोः) दूर करें।

ऋचा में कर्मयोगी का प्रकरण है।

त्वं समुद्रो असि विश्ववित्कवे तवेमाः पंच प्रदिशो विधर्मणि।
त्वं द्यां च पृथिवीं चाति नभ्रिषे तव ज्योतिंषि पवमान सूर्यः॥

पदार्थ- (विश्व वित् कवे) हे संपूर्ण विश्व के ज्ञाता परमेश्वर! (त्वम्) आप (समुद्रोऽसि) समुद्र हो। जिसमें सब भूत उत्पत्ति स्थिति और प्रलय को प्राप्त हो उसका नाम समुद्र है। (तव विधर्मणिः) आपकी विशेष सत्ता में (इमाः पंच प्रदिशः) इन पाँचों भूतों के सूक्ष्म पंच तन्मात्रा विराजमान हैं और (त्वम् द्याञ्च) आप द्युलोक को (पृथिवीञ्च) और पृथ्वी लोक को अति (अभ्रिवे) भरण पोषण करते हो। और हे पवमान परमात्मा। (सूर्य्यः) सूर्य भी (तव ज्योतिषि) तुम्हारी ही ज्योति है।

अब हम अन्तिम ऋचा पर विचार करते हैं।

त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे।
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे॥

पदार्थ- आप अपने पवित्र स्वरूप में दिव्य गुण युक्त रजोगुण के परमाणुओं से इस संसार को उत्पन्न करते हो। हे परमात्मन्! आप सबको पवित्र करने वाले हो, सबको पवित्र करते हो। आपको वैज्ञानिकों ने प्रथम ग्रहण किया। ये सम्पूर्ण लोक-लोकान्तर अपने आपको आपके प्रति समर्पित करते हैं। इस सम्पूर्ण वर्णन से ज्ञात होता है कि सिक्ता निवावरी का सोच वैज्ञानिक था और वह परमपिता परमेश्वर की अनन्य उपासक थी। इति शम्।

- ७३, शास्त्री नगर
दादाबाड़ी, कोटा

❑❑❑

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

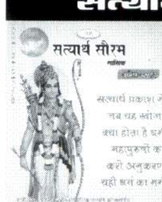

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ २५ पर देखें।

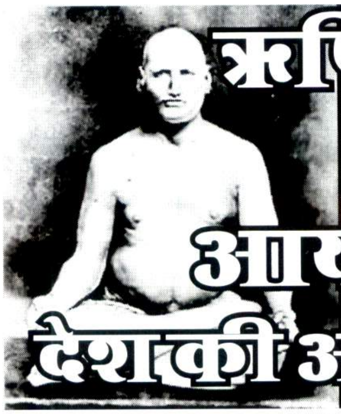

ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की देश की आजादी में भूमिका

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द (१८२५-१८८३) के समय में देश एक ओर जहाँ अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, मिथ्या परम्पराओं व अनेकानेक सामाजिक बुराईयों से ग्रस्त था वहीं दूसरी ओर इन्हीं कारणों से वह विगत सात सौ से कुछ अधिक वर्षों से पराधीनता के जाल में भी फँसा हुआ था। ऋषि दयानन्द वेदों के उच्च कोटि के विद्वान् व सृष्टि के आदि काल से आरम्भ ऋषि परम्परा के योग्यतम प्रतिनिधि भी थे। वह राष्ट्र के सच्चे पुरोहित एवं सभी देशवासियों के आचार्य, कर्त्तव्य व आचरण की शिक्षा देने वाले गुरु भी थे। उनके सामने देश को अविद्या, अज्ञान व पाखण्डों से दूर करने की चुनौती थी और साथ ही देश की पराधीनता को भी समाप्त करना उनको अभीष्ट था। उन्होंने विचार कर देश से अविद्या व अन्धविश्वासों को दूर करने के कार्य को प्राथमिकता दी और सन् १८६३ में वेदों का प्रचार, असत्य का खण्डन और सत्य का मण्डन करना आरम्भ कर दिया। धर्म विषयक सभी विषयों पर वह स्थान-स्थान पर जाकर प्रवचन दिया करते थे और लोगों का शंका समाधान भी करते थे। शंका समाधान सुनकर व प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर पठित, शिक्षित व निष्पक्ष लोगों की सन्तुष्टि हुआ करती थी और उनमें से कुछ उनके अनुयायी बन जाते थे। पौराणिक हिन्दुओं की जिन प्रमुख मान्यताओं का वह खण्डन करते थे उनमें मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, बाल विवाह, बेमेल विवाह, जन्मना जातिवाद मुख्य थे वहीं सबको उन्नति के समान अवसर देने वाली गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्ण व्यवस्था का समर्थन भी वह करते थे। वेद विरोधी व मिथ्या परम्पराओं के समर्थकों को शास्त्रार्थ की चुनौती भी दी जाती थी। स्वामी जी ने अनेक मतों के विद्वानों से भिन्न-भिन्न विषयों पर शास्त्रार्थ किये। सबसे मुख्य शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा पर वाराणसी में १६ नवम्बर, सन् १८६९ को काशी के राजा श्री ईश्वरीय प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में हुआ था। इस शास्त्रार्थ में स्वामी जी अपने वैदिक पक्ष को प्रस्तुत करने वाले अकेले विद्वान् थे जबकि पौराणिक मूर्तिपूजक विद्वानों की संख्या ३० से अधिक थी। श्रोताओं के रूप में भी लगभग ५० हजार की जनसंख्या शास्त्रार्थ स्थल आनन्दबाग में उपस्थित थी। इस शास्त्रार्थ का निर्णय स्वामी दयानन्द जी के पक्ष में हुआ था। कालान्तर में स्वामी जी ने अपने विचारों को अनेक ग्रन्थों के माध्यम से प्रस्तुत किया। संस्कृत व हिन्दी में ऋग्वेद (आंशिक) तथा यजुर्वेद के सम्पूर्ण भाष्य सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि,आर्याभिविनय, पंचमहायज्ञविधि, गोकरुणानिधि, व्यवहारभानु आदि उनके कुछ प्रमुख ग्रन्थ हैं। उनके यह सभी ग्रन्थ **'न भूतो न भविष्यति'** की उपमा को चरितार्थ करते हैं। १० अप्रैल, सन् १८७५ को स्वामी जी ने मुम्बई में वेदों के प्रचार व प्रसार के लिए 'आर्यसमाज' नामक संगठन स्थापित किया। सच्ची आध्यामिकता के प्रचार, समाज सुधार, पाखण्ड व अन्धविश्वासों के निवारण, देश में शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु डी.ए.वी स्कूल तथा गुरुकुलों की स्थापना तथा देश की आजादी में उनकी व उनकी अनुयायी संस्था आर्यसमाज की महत्वपूर्ण भूमिका है।

ऋषि दयानन्द के समय देश अंग्रेजों का गुलाम था। अंग्रेज देश वासियों का शोषण व उन पर अत्याचार करते थे। देश व देशवासियों की उन्नति के मार्ग बन्द थे। आजादी की बात करना अपनी मृत्यु को दावत देना था। कोई उचित माँग करने व गलत नीतियों का विरोध करने पर वह उसे सहन नहीं कर पाते थे। सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में देशवासियों का अमानवीय उत्पीड़न किया गया था। लोगों को ईसाई बनाने का षड्यन्त्र भी किया जाता था। यह वह काल था जब आजादी का आन्दोलन आरम्भ नहीं हुआ था और न ही देश में आन्दोलन का कहीं वातावरण ही था। कांग्रेस की स्थापना भी सन् १८८५ में हुई। इससे २२ वर्ष पूर्व ही ऋषि दयानन्द ने वेद प्रचार करना आरम्भ कर दिया था। सन् १८७४ में उनके एक भक्त राजा जयकृष्ण दास ने उन्हें अपने

प्रमुख व सभी विचारों का ग्रन्थ लिखने की प्रेरणा की जिससे वह लोग भी लाभान्वित हो सकें जो उनके उपदेश सुनने आ नहीं पाते। ऐसे ग्रन्थ से वे लोग भी लाभान्वित हो सकते थे जो बहुत दूर रहते थे तथा सत्य धर्म व सत्य परम्पराओं को जानने के इच्छुक थे। ऐसे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए स्वामी दयानन्द जी ने सन् १८७४ में सत्यार्थप्रकाश नामक अपना प्रमुख ग्रन्थ लिखा जिसका कुछ समय बाद सन् १८७५ में प्रकाशन हुआ। इसका संशोधित संस्करण सन् १८८३ में तैयार किया गया। ३० अक्तूबर, सन् १८८३ को स्वामी जी की एक षड्यन्त्र के अन्तर्गत मृत्यु के कारण संशोधित सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन सन् १८८४ में हुआ। अपने इस ग्रन्थ में स्वामी जी ने कहीं स्पष्ट व कहीं संकेत रूप में देश की आजादी की चर्चा कर देशवासियों को देश को आजाद कराने के लिए प्रेरित किया।

अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्वदेशी राज्य वा स्वराज्य का स्पष्ट रूप से उल्लेख कर विदेशी राज्य को माता-पिता के समान कृपा, न्याय व दया तथा पूर्ण निष्पक्ष होने पर भी उसके स्वराज्य वा स्वदेशी राज्य के समान न होने की घोषणा

कर उन्होंने आजादी की नींव रख दी थी, ऐसा हम अनुभव करते हैं। यह बता दें कि **उस समय स्वदेशी राज्य व स्वराज्य की कहीं चर्चा नहीं की जा रही थी। इन शब्दों का इतिहास में पहली बार प्रयोग उन्हीं के द्वारा हुआ है।** वह लिखते हैं 'अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी किन्तु आर्यावर्त्त (भारत) में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्र हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है।' इसके बाद उन्होंने जो लिखा है स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य है व एक प्रकार से देश को आजाद कराने का एलान है। वह लिखते हैं **'कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'** इन पंक्तियों में स्वामी दयानन्द जी ने स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि उत्तम बताया है और कहा है कि अंग्रेजों के राज्य में अनेक गुण होने पर भी उनका राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। यहाँ संकेत रूप में वह देशवासियों को पूर्ण सुख की प्राप्ति के लिए स्वदेशी राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्न वा आन्दोलन की प्रेरणा करते हुए प्रतीत हो रहे हैं।

स्वामी दयानन्द जी के अन्य सभी ग्रन्थों में भी देश के स्वाभिमान वा आत्म गौरव को जगाने के लिए प्रचुर सामग्री मिलती है। लेख की सीमा के कारण सबका उल्लेख नहीं किया जा सकता। उनके ग्रन्थों से कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं। सत्यार्थप्रकाश में वह लिखते हैं कि 'यह आर्यावर्त्त (भारत) देश ऐसा देश है जिसके सदृश्य भूगोल में दूसरा कोई देश (इंग्लैण्ड, अमेरिका व अन्य भी) नहीं है। इसीलिये इस (आर्यावर्त्त देश की) भूमि का नाम सुवर्णभूमि है क्योंकि यही सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। इसीलिये सृष्टि की आदि में (१,९६,०८,५३ हजार सत्रह वर्ष पूर्व) आर्य लोग (तिब्बत से सीधे) इसी देश में आकर बसे। (सृष्टि का आदि काल होने से यह सारा स्थान व देश खाली पड़ा था, कोई मनुष्य यहाँ रहता नहीं था, यह आर्य ही आदिवासी थे जिन्होंने इस आर्यावर्त्त वा भारत देश को बसाया, इनसे पूर्व अन्य कोई आदिवासी यहाँ बसता वा रहता नहीं था)। इसीलिए (ऋषि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के) सृष्टि विषय में कह आये हैं कि आर्य नाम उत्तम पुरुषों का है और आर्यों से भिन्न मनुष्यों का नाम दस्यु है। जितने भूगोल में देश हैं वे सब इसी (आर्यावर्त्त भारत) देश की प्रशंसा करते हैं और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिस को लोहेरूप दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।' इन पंक्तियों में स्वामी दयानन्द जी ने भारत को विश्व का सबसे उत्तम देश बताया है और कहा है कि विदेशी (अंग्रेज आदि) इसके स्पर्श से अर्थात् संगति से धनाढ्य हो जाते हैं। इन पंक्तियों का उद्देश्य देशवासियों के आत्म गौरव को जगाना था। हमने पहली बार जब इन पंक्तियों को पढ़ा था तो हमने भी आत्मगौरव व रोमांच का अनुभव किया था।

ऋषि दयानन्द देश को आजाद कराने के लिए देशवासियों में आत्मगौरव में और वृद्धि करने के लिए यह भी बताते हैं कि

सृष्टि के आरम्भ से पाँच सहस्र वर्ष पूर्व महाभारतकाल पर्यन्त भारत वा आर्यावर्त्त देश का ही समस्त भूमण्डल पर सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि राज्य था। सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में उनके शब्द हैं 'सृष्टि (के आरम्भ) से ले के पाँच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि

एकमात्र राज्य था। अन्य देशों में माण्डलिक अर्थात् छोटे-छोटे राजा रहते थे क्योंकि कौरव पाण्डव पर्यन्त यहाँ के राज्य और राजशासन में सब भूगोल के सब राजा और प्रजा चले थे।' वह यह भी कहते हैं कि महाराज युधिष्ठिर जी के राजसूय यज्ञ और महाभारत युद्ध पर्यन्त यहाँ के राज्य के आधीन सब राज्य थे। यह इसलिए लिखा है जिससे देशवासी यह जान सकें कि अंग्रेजों की गुलामी तो दो सौ वर्ष से भी कम समय से है जबकि हमारे पूर्वजों ने तो पूरे विश्व पर १.९६ अरब वर्ष तक सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य किया है।

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ही एक प्राचीन ग्रन्थ 'मैत्र्युपनिषद्' का प्रमाण देकर बताया है कि 'सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारतपर्यन्त चक्रवर्ती सार्वभौम राजा आर्यकुल में ही हुए थे। अब इनके सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों (अंग्रेजों) के पादाक्रान्त हो रहे हैं। जैसे यहाँ सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौवनाश्व, अश्वपति, शशविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, ननक्तु, शर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत, और भरत सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्त्ती राजाओं के नाम लिखे हैं, वैसे स्वायंभुवादि चक्रवर्त्ती राजाओं के नाम स्पष्ट मनुस्मृति महाभारतादि ग्रन्थों में लिखे हैं। इस को मिथ्या करना अज्ञानी और पक्षपातियों का काम है।' इसकी कहीं कोई चर्चा नहीं करता। कम्युनिस्ट इतिहासकार न करें, परन्तु भारतीय मनीषियों को तो इसका ज्ञान होना चाहिये और मीडिया में भी देशवासियों को इसकी जानकारी दी जानी चाहिये। आत्मगौरव में वृद्धि का यह भी एक महत्वपूर्ण कारक है। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में एक महत्वपूर्ण बात यह भी कही है 'परदेशी (अंग्रेज व अन्य विदेशी विधर्मी) स्वदेश में व्यवहार वा राज्य करें तो विना दारिद्र्य और दुःख के दूसरा कुछ भी (परिणाम) नहीं हो सकता।'

ऐसे अनेक प्रमाण स्वामी दयानन्द जी के सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय, संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं। यह सब लिखने के पीछे उनका उद्देश्य यही स्पष्ट जान पड़ता है कि वह देशवासियों को यह सब तथ्य बता कर विदेशी राजनैतिक परतन्त्रता को दूर करने की ओर अग्रसर कर रहे थे। स्वामी जी के जीवनकाल व उसके बाद उनके यह क्रान्तिकारी विचार उनके सहस्रों व लाखों अनुयायियों व कुछ इतर देशवासियों में भी पहुँचे थे। योगी अरविन्द ने भी स्वामी दयानन्द जी को पढ़ा था। अतः इन विचारों का प्रभाव देशवासियों पर पड़ा। ऋषि दयानन्द जी की मृत्यु हो जाने के बाद आर्यसमाज को स्वतन्त्रता आन्दोलन का नेतृत्व करना चाहिये था परन्तु ऐसा लगता है कि उनसे यह चूक हो गई। जो भी हो, आर्यसमाज के अनुयायियों ने आजादी के आन्दोलन को अपने कार्यों व बलिदानों से पोषित किया। देश की आजादी के आन्दोलन में सक्रिय लोगों में प्रायः सभी आर्यसमाजी किसी न किसी रूप में जुड़े होते थे। यहाँ तक कहा जाता है कि आजादी के आन्दोलन में ८० प्रतिशत लोग आर्यसमाजी थे। यह भी बता दें कि महादेव रानाडे और पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानन्द जी के दो प्रमुख शिष्य थे। रानाडे जी के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले जी थे और उनके महात्मा गाँधी। इसी प्रकार क्रान्तिकारियों के आद्य गुरु व आचार्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा थे जिन्होंने इंग्लैण्ड में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना की थी। प्रायः सभी क्रान्तिकारी वहाँ रहा करते थे। वीर सावरकर जी व अन्य प्रमुख क्रान्तिकारी भी इण्डिया

हाउस में ही रहते थे। आजादी के प्रमुख राष्ट्रीय नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय, भाई परमानन्द जी, पं. रामप्रसाद बिस्मिल, शहीद भगतसिंह जी का पूरा परिवार स्वामी दयानन्द का अनुयायी था। इन कुछ उदाहरणों व चर्चा से स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द व आर्यसमाज का देश की आजादी में प्रमुख योगदान था। आज भी आर्यसमाज देश व समाज हित में अनेकानेक काम कर रहा है। यदि सारा देश आर्यसमाज की विचारधारा को स्वीकार कर ले तो यह देश व पृथिवी सुख का धाम बन सकता है।

सत्यार्थप्रकाश में ऋषि दयानन्द ने योगेश्वर कृष्ण जी की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यदि वह सचमुच होते तो वह अंग्रेजों के धुर्रे उड़ा देते। सम्भवतः उनकी मृत्यु के कारणों में से एक कारण सत्यार्थप्रकाश में विदेशी राज्य के विरुद्ध लिखे उनके शब्द हो सकते हैं। स्वामी दयानन्द मूर्तिपूजा, कृष्ण, अंग्रेज प्रसंग में लिखते हैं कि 'जब संवत् १६१६ के वर्ष में (सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य समर में) तोपों के मारे मन्दिर की मूर्तियाँ अंग्रेजों ने उड़ा दी थीं तब मूर्ति कहाँ गई थी? प्रत्युत् बाघेर लोगों ने जितनी वीरता की और लड़े, शत्रुओं को मारा, परन्तु मूर्ति एक मक्खी की टाँग भी न तोड़ सकी। जो श्री कृष्ण के सदृश कोई (बुद्धिमान, क्षत्रिय योद्धा) होता तो इनके (अंग्रेजों के) धुर्रे उड़ा देता और ये भागते फिरते। भला यह तो कहो कि जिस का रक्षक (कृष्ण जी की मूर्ति) मार खाय उस के शरणागत (कृष्ण जी के भक्त) क्यों न पीटे जायें? इसी के साथ लेख को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

- १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
चलभाष- ०९४१२९८५१२१

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४५

४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

समाचार

भीलवाड़ा जिले में वेद प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, भीलवाड़ा के तत्वावधान में दिनांक ५ जुलाई से २० जुलाई तक जिले के ग्राम्य अंचलों में सघन वेदप्रचार का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पं. भूपेन्द्र सिंह जी (अलीगढ़, उ.प्र.) एवं पं. लेखराज जी शर्मा (भरतपुर) ने अपनी सारगर्भित प्रस्तुतियों से श्रोताओं को प्रेरणा प्रदान की। यह सम्पूर्ण आयोजन आर्य समाज, भीलवाड़ा के सौजन्य से सम्पन्न हुआ। **- कन्हैयालाल साहू, प्रधान**

वृहद् वृष्टि यज्ञ

आर्य समाज मंदिर, महर्षि पाणिनीनगर मगरा पूंजला में १६ जुलाई से

२३ जुलाई तक वृहद् वृष्टि यज्ञ प्राणीमात्र के कल्याण एवं राष्ट्र में खुशहाली की मगलकामनाओं के साथ किया गया। आचार्य सोमदेव जी (अजमेर) एवं बहिन अंजली जी आर्या (करनाल, हरियाणा) द्वारा आध्यात्मिक भजन व प्रवचन प्रस्तुत किए गए। **- शिवराम आर्य, मंत्री**

स्वाध्याय शिविर सम्पन्न

गुरुकुल पौंधा, देहरादून में दिनांक २६ मई से १ जून २०१७ तक

स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया। जिसका समापन २ से ५ जून २०१७ तक गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के रूप में हुआ।

शिविर में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का स्वाध्याय आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई) द्वारा सम्पन्न हुआ। शिविरार्थियों ने स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सोमदेव जी, आचार्य धनंजय शास्त्री एवं सुखवीर सिंह आर्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा ऐसे आयोजनों को अतीव लाभकारी बताया। **- सुखवीर आर्य, संयोजक**

श्री शिवकुमार मदान जी रोजगार मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य मनोनीत

भारत सकार ने श्रम एवं रोजगार मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया है जिसमें आर्य समाज जनकपुरी पंखा रोड, दिल्ली के प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी को सदस्य मनोनीत किया है।

श्री मदान जी को न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा के स्मृति दिवस की तैयारी

माण्डवी (कच्छ) आगामी महीने २० अगस्त २०१७ भानुमती श्यामजी कृष्ण वर्मा के स्मृति दिवस के अवसर पर भव्य आर्यमहिला महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व व मांडवी आर्य समाज जन सहभागिता के साथ इस कार्यक्रम को भव्यता के साथ मनाने जा रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मानस पुत्र, स्वतन्त्रता के प्रबल समर्थक, क्रान्तिवीर, इंग्लैण्ड में इण्डिया हाउस के संस्थापक एवं हजारों युवकों के प्रेरणास्रोत पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा की धर्मपत्नी, देशभक्ता, भारतीय संस्कृति संस्कारों से ओतप्रोत स्वर्गीय भानुमती वर्मा की स्मृति में कार्यक्रम गुजरात सरकार G.M.D.C. के सहयोग से होगा, जिसमें अनेक कार्यक्रम होंगे।

सभी कार्यक्रमों की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान व गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य करेंगे। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री, आर्यसमाज टंकारा के प्रमुख श्री हँसमुखभाई परमार करेंगे। इस क्रान्ति-तीर्थ स्थल माण्डवी के भव्य कार्यक्रम में भाग लेने के लिए अनेक गणमान्य जनों के भी आने की सूचना प्राप्त हो रही है। **- दिवाकर शास्त्री, पुरोहित**

गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया गया

सेवाराम पटेल की बावड़ी, आर्य समाज मंदिर, नागदा में मनाये गये इस पर्व के अवसर पर डॉ. पंडित लक्ष्मीनारायण सत्यार्थी ने गुरु के सच्चे स्वरूप का विशद् वर्णन करते हुए कहा कि जो प्रभु के तत्व रूप का दर्शन करा दे, भीतर प्रकट कर प्रत्यक्ष साक्षात्कार करा दे वही गुरु है। उन्होंने कहा कि संसार में समय-समय पर अनेक महात्मा गुरु की भूमिका निभाते हुए समाज को उच्च आदर्शों से ओतप्रोत करने का प्रयत्न करते रहे हैं। इस अवसर पर श्री रमेश चन्द चन्देल, वैद्य रामसेवक पाण्डे आदि ने अपने विचार रखे। गायत्री पांचाल ने ईश्वर भक्ति पर गीत सुनाया। संचालन मंत्री कमल आर्य ने किया।

- जगदीश पांचाल

द्वि दिवसीय वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज अंजलि विहार तथा भीमगंज मण्डी कोटा के वेद प्रचार

कार्यक्रम में केलवाड़ा गुरुकुल के आचार्य वेदप्रिय शास्त्री तथा देहरादून के भजनोपदेश पंडित सत्यपाल सरल के भजनोपदेश हुए। शास्त्री जी ने ९ जुलाई २०१७ को गुरु पूर्णिमा के दिन गुरु शब्द की व्याख्या करते हुए गुरु को सन्मार्ग पर ले जाने वाला बताया। गुरुओं का गुरु वह परमात्मा है, यह बताते हुए नकली गुरुओं से सचेत किया।

सायं आर्य समाज अंजलि विहार की प्रधाना श्रीमती उषा आर्या का जन्मदिन व पूर्णिमा सत्संग भव्य रूप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज को एक वैचारिक आन्दोलन के रूप में निरूपित करते हुए वेदप्रिय शास्त्री जी ने अत्यन्त प्रेरणा से ओतप्रोत उद्बोधन प्रदान किया। सभी सत्रों का सफल संचालन श्री राजेन्द्र आर्य ने किया।

हलचल

अन्तरिक्ष विज्ञान में भारत की ऊँची छलांग

इसरो ने 'बाहुबली' को अंतरिक्ष में भेजा

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने एक बार फिर सफलता का झण्डा गाड़ दिया है। गत ५ जून को इसने सौ फीसदी स्वदेशी

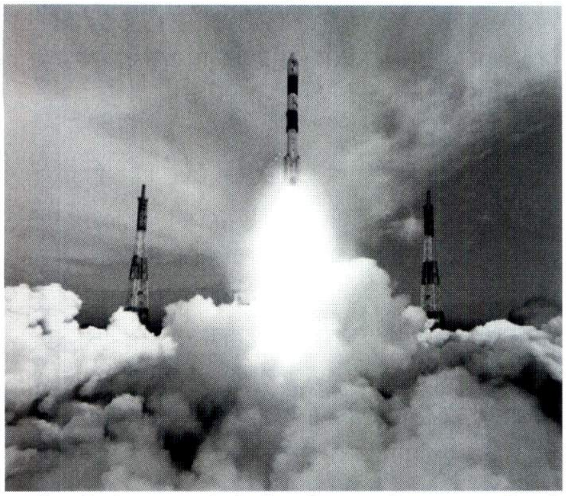

तकनीक से तीन हजार किलो से अधिक वजनी उपग्रह अंतरिक्ष में प्रस्थापित किया। यह 'जीसेट-१९' उपग्रह भारत का अब तक का सबसे भारी उपग्रह है। इस उपग्रह को जिस रॉकेट की सहायता से आकाश में भेजा गया वह तेरह मंजिल ऊँचे मकान की ऊँचाई (४३.४३ मीटर) का था। हमारी विशेष उपलब्धि यह है कि इस रॉकेट में स्वदेश में बना क्रायोजीनिक इंजन लगा था। इस रॉकेट को इसरो ने 'फेट बॉय' नाम दिया था, जिसका समानार्थी बाहुबली है।

आज के तीस साल पहले अमरीका ने हमें क्रायोजेनिक इंजन नहीं दिया था। जब हमने रूस से यह इंजन लेना चाहा तो अमरीका ने रूस पर भी दबाव बनाया और रूस ने भी इन्कार कर दिया। तब हमारे स्वाभिमानी वैज्ञानिकों ने 'क्रायोजेनिक इंजन' भारत में ही बनाने का निश्चय किया। अमरीका ने फिर भी टांग अड़ाने में कसर नहीं रखी। उस समय के इसरो के शीर्षस्थ वैज्ञानिक डा. नाम्बियार ने घोषणा की थी भारत दस साल में अपना क्रायोजीनिक इंजन बना लेगा। अमरीका ने उन्हें जासूसी के झूठे आरोप में पकड़वा दिया। लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद डा. नाम्बियार पूर्णतः दोषमुक्त हो गये लेकिन भारत बीस साल पीछे हो गया।

विशेष बात यह है कि भारत में बना क्रायोजेनिक इंजन अमरीका और रूसी इंजनों की तुलना में काफी कम लागत में तैयार हुआ है।

- साभार-पाथेय कण

३६ वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का समापन सम्पन्न

'अगर देश के काम न आये तो जीवन है बेकार हो जाओ तैयार साथियों, हो जाओ तैयार।' पूर्वोत्तर भारत से आये छात्रों द्वारा गाये इस गीत के साथ अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ की ओर से आयोजित ३६वें वनवासी वैचारिक क्रान्ति शिविर का समापन सम्पन्न हुआ। बच्चों द्वारा भजन प्रस्तुति के साथ समारोह का भव्य आरम्भ वैदिक राष्ट्रगान के साथ महाशय धर्मपाल जी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। समारोह में आये सभी अथितियों का पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन आचार्य दयासागर ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्याम जाजू उपस्थित रहे। इस अवसर पर उन्होंने दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा वनवासी प्रतिभागियों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा देने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि सबका साथ सबका विकास आर्यसमाज के मंचों और कार्यक्रमों में हमेशा देखने को मिलता है। सिर्फ भाषण देने से उन्नति नहीं होती, देश की उन्नति होती है आर्यसमाज की तरह पूर्णनिष्ठा एवं लग्न के साथ काम करने से। जहाँ देश में लोग दो दिन से ज्यादा मेहमान के रुकने से थक जाते हैं ऐसे में आर्य समाज सैंकड़ों हजारों बच्चों का निस्वार्थ पालन-पोषण कर रहा है।

इस अवसर पर महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर ने बताया कि शिविर में आसाम, नागालैंड, झारखंड, छत्तीसगढ़, ओडिसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश इत्यादि राज्यों से करीब २०० बच्चों समेत अन्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में मौजूद राष्ट्रीय जनजाति आयोग की उपाध्यक्ष अनुसुईया यूइके ने अपने उद्‌बोधन में पूरे सदन को संबोधित करते हुए कहा कि 'बिना आडम्बर और निःस्वार्थ भाव से आर्यसमाज आज देश को नई दिशा देने का कार्य कर रहा है।'

कार्यक्रम में एन सी एस टी की उपाध्यक्ष अनुसुईया यूइके, वनवासी कल्याण संगठन मंत्री सुरेश कुलकर्णी समेत संस्था के प्रधान महाशय धर्मपाल (एम.डी.एच ग्रुप), कैप्टन रुद्रसेन हरिभूमि समाचार पत्र, विनोद खन्ना, विश्व हिन्दू परिषद की ओर से विनोद बंसल, आचार्य वागीश, मध्यप्रदेश से आचार्य दयासागर, राजस्थान से आचार्य जीववर्धन जी समेत अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०६/१७ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/१७ के चयनित विजेताओं के नाम** इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्रीमती उषा आर्या; उदयपुर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (राज.), श्री अच्युता हरकाल; अहमदनगर (महाराष्ट्र), श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री वासुदेव भाई मगनलाल ठक्कर (करिया); बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेव भाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), श्री बीरेन्द्र कर; शिशुपालगढ़ (भुवनेश्वर), श्री जीवनलाल आर्य; दिल्ली, श्री रमेशचन्द्र गुप्ता; दिल्ली, श्री सत्यनारायण तोलम्बिया; भीलवाड़ा (राज.), श्री हीरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री धर्मवीर आसेरी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री सुबोध गुप्ता; हरिद्वार (उत्तराखण्ड), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.)। **सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।**

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २५ पर अवश्य पढ़ें।

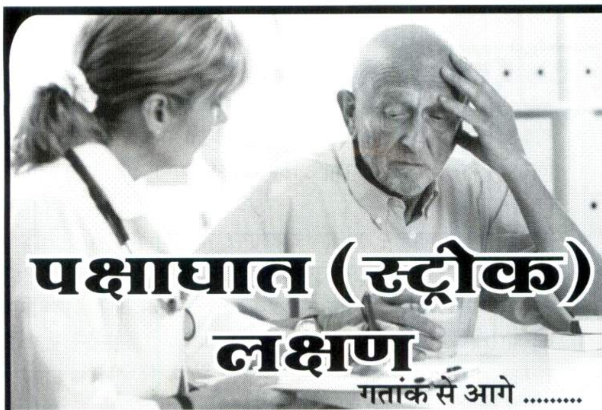

पक्षाघात (स्ट्रोक) लक्षण

गतांक से आगे ....

पक्षाघात के लक्षण आसानी से पहचान में आ जाते हैं। आकस्मिक स्तब्धता या कमजोरी खासतौर से शरीर के एक हिस्से में आकस्मिक उलझन या बोलने, किसी की कही बात समझने, एक या दोनों आँखों से देखने में आकस्मिक तकलीफ, अचानक सामंजस्य का अभाव, बिना किसी ज्ञात कारण के अचानक सरदर्द या चक्कर आना। चक्कर आने या सरदर्द होने के दूसरे कारणों की पड़ताल के क्रम में भी पक्षाघात का निदान हो सकता है। ये लक्षण संकेत देते हैं कि पक्षाघात हो गया है और तत्काल चिकित्सकीय देखभाल की जरूरत है। उच्च रक्तचाप, हृदयरोग, डाइबिटीज और धूम्रपान पक्षाघात का जोखिम पैदा करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारक हैं। इनके अलावा अल्कोहल का अत्यधिक सेवन, उच्च रक्त कॉलेस्ट्रॉल स्तर, नशीली दवाइयों का सेवन, अनुवांशिक या जन्मजात परिस्थितियाँ, विशेषकर रक्त परिसंचारी तंत्र के विकार।

शीघ्र स्वास्थ्य लाभ

इस बात की स्पष्ट जानकारी नहीं थी कि मस्तिष्क पक्षाघात या मस्तिष्क के दौरे से होने वाली क्षति की भरपाई कर लेता है। मस्तिष्क की कुछ कोशिकाएँ मरी नहीं होती बल्कि क्षतिग्रस्त हुई रहती हैं और फिर से काम करना शुरू कर सकती हैं। कुछ मामलों में मस्तिष्क खुद ही अपने काम-काज का पुनःसंयोजन कर सकता है। कभी-कभार मस्तिष्क का कोई हिस्सा क्षतिग्रस्त हिस्से का काम संभाल लेता है। पक्षाघात के पर्यवेक्षक कई बार उल्लेखनीय और अनपेक्षित स्वास्थ्य लाभ होते देखते हैं जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती।

स्वास्थ्य लाभ के सामान्य सिद्धान्त दर्शाते हैं

पक्षाघात के १० प्रतिशत उत्तरजीवी लगभग पूरी तरह चंगे हो जाते हैं। २५ प्रतिशत कुछ मामूली विकृति के साथ चंगे हो जाते हैं। ४० प्रतिशत हल्की से लेकर गंभीर विकलांगता के शिकार हो जाते हैं और उन्हें विशेष देख-रेख की जरूरत पड़ती है।

१० प्रतिशत की नर्सिंगहोम में या दीर्घकालिक देख-रेख करने वाली दूसरी सुविधाओं में रख कर उनकी देख-भाल करनी होती है। १५ प्रतिशत पक्षाघात के कुछ ही समय बाद मर जाते हैं।

पुनर्वास

पुनर्वास पक्षाघात लगने के तुरन्त बाद जितनी जल्दी संभव होता है, अस्पताल में ही शुरू हो जाता है। ऐसे मरीजों का पुनर्वास पक्षाघात के दो दिन बाद शुरू होता है, जिनकी हालत स्थिर होती है। और अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद भी जरूरत के लिहाज से उसे जारी रखा जाना चाहिए।

पुनर्वास का मकसद क्रिया-कलापों में सुधार लाना होता है ताकि पक्षाघात का उत्तरजीवी जहाँ तक संभव हो स्वतंत्र रह सके। पक्षाघात के उत्तरजीवी को फिर खाना खाने, कपड़े पहनने और चलने जैसे मौलिक काम सिखाने का काम इस तरह किया जाना चाहिए ताकि व्यक्ति की मानवीय गरिमा अक्षुण्ण रहे। हालाँकि पक्षाघात शरीर का रोग है लेकिन वह व्यक्ति के पूरे शरीर को प्रभावित कर सकता है। पक्षाघात जन्य विकलांगताओं में लकवा, संज्ञानात्मक कमियाँ, बोलने में परेशानी, भावानात्मक परेशानियाँ, दैन्य दिन जीवन की समस्याएँ और दर्द शामिल होता है।

पक्षाघात सोचने, समझने, एकाग्रता सीखने, फैसले लेने, और याददाश्त की समस्या पैदा कर सकता है। पक्षाघात का मरीज अपने परिवेश से अनजान हो सकता/सकती है या पक्षाघात जन्य मानसिक कमी से भी अनजान हो सकता/सकती है।

पक्षाघात पीड़ितों को प्रायः किसी की कही बात समझने या अपनी बात कहने में भी परेशानी हो सकती है।

नेशनल स्ट्रोक एसोसिएशन के अनुसार पक्षाघात की वजह से हर साल संयुक्त राज्य अमरीका पर ४३ अरब डालर की लागत आती है, जिसमें चिकित्सकीय परिचर्या और चिकित्सा पर आने वाली प्रत्यक्ष लागत लगभग २८ अरब डालर सालाना होती है।

स्रोत- नेशनल स्ट्रोक असोसिएशन
नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूरोलोजिकल डिस्आर्डर्स एण्ड स्ट्रोक

२३ जुलाई २०१७ को न्यास के संस्थापक अध्यक्ष स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी की पुण्यतिथि के अवसर पर नवलखा महल स्थित माता लीलावन्ती सभागार में एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य द्वारा स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर डिजिटल शो के माध्यम से प्रकाश डाला गया। स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती का जीवन अत्यन्त प्रेरणादायी है। वे पुरुषार्थ की प्रतिमूर्ति थे। उस समय जब उच्चतम डिग्री तक कम ही लोग पहुँच पाते थे उन्होंने भूगर्भ शास्त्र में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। सैद्धान्तिक योग्यता को प्रायोगिक क्षेत्र में विस्तृत करते हुए उन्होंने कार्य व्यापार को अत्यन्त विस्तार दिया। प्रसिद्ध संस्थान वोलकेम इंडस्ट्रीज को जन्म दिया और वोलेस्टोनाइट जैसे महत्वपूर्ण खनिज की खोज की। उपराष्ट्रपति जी ने उनके योगदान के लिए उन्हें राष्ट्रपति-पदक से सम्मानित किया। सामाजिक क्षेत्र की बात करें तो प्रारम्भ से ही हनुमान प्रसाद चौधरी (पूर्व नाम) धार्मिक प्रवृत्ति के थे। तत्कालीन समय में पौराणिक अभिचारों को श्रद्धापूर्वक निष्पन्न किया करते थे। प्रभु कृपा हुई जब उदयपुर में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी का आयोजन हुआ उस समय से आर्य समाज के सम्पर्क में आये और अपने योगदान और व्यक्तित्व के कारण शीघ्र ही आर्य समाज, समोरबाग के प्रधान बनाए गए। इसी समय में उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश रचना स्थली जो कि गुलाब बाग में अवस्थित है उसके दर्शन किए। उन्हें यह देख अत्यन्त पीड़ा हुई कि आर्य समाजस्थ लोगों में धर्मग्रन्थ की हैसियत रखने वाले सत्यार्थ प्रकाश की रचना स्थली पूर्णतः उपेक्षित पड़ी हुई है। यह नवलखा महल तब अत्यन्त जर्जर हाल में था और यहाँ राज्य सरकार का आबकारी कार्यालय होने के कारण शराब की बोतलों से अटा पड़ा था। मन में संकल्प हुआ कि ऋषिवर की इस पवित्र तपोस्थली को विश्व विख्यात स्मारक का रूप देना चाहिए। सबसे पहली आवश्यकता थी राज्य सरकार से इस महल के अधिग्रहण की। उस समय राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पद पर पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती कार्यरत् थे। इन दोनों के प्रयत्नों से स्वर्गीय श्री भैरोसिंह शेखावत (तत्कालीन मुख्यमंत्री राजस्थान सरकार) सहमत तो हो गए परन्तु उनके मन में एक बात थी कि आर्य समाज एक बार इस जर्जर भवन को ले लेगा उसके बाद इसके लिए पैसे भी माँगेगा।

स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती का पुण्य स्मरण किया गया।

तुमसे बिछुड़े बरस हुए,
पर हृदयावस्थित हो अब भी।
कार्य तुम्हारे, अन्तर्मन में,
प्रेरक बन रहते अब भी।
यही विनय प्रभु से हम सबकी,
करें अनुकरण हम अब भी।।

– अशोक आर्य

इस कारण वे मानस नहीं बना पा रहे थे। ऐसे अवसर पर श्री हनुमान प्रसाद चौधरी ने एक खाली चैक माननीय शेखावत जी को अर्पित किया कि जो रकम चाहें वह भर लें वह रकम नवलखा महल के जीर्णोद्धार में काम आयेगी। इस प्रकार दस लाख रु.के दान के साथ नवलखा महल का अधिग्रहण हुआ तो चौधरी साहब ने यहीं पर बस नहीं की। १९९२ से १९९८ तक प्रतिदिन कई घंटे यहाँ बैठकर वे इस स्थल को विशद् आयाम प्रदान करने में संलग्न हो गए। अपने उद्देश्य में आकण्ठ डूबकर सर्वमेध यज्ञ की इच्छा करते हुए अन्ततोगत्वा १९९८ में आपने संन्यास ग्रहण किया और अपने आलीशान बंगले को बेचकर साँप, बिच्छू जैसे जानवरों के साहचर्य में, नवलखा महल में ही छोटी सी साधना कुटीर बनाकर भागीरथ तप आरम्भ कर दिया। आज हम जो कुछ भी इस पवित्र स्मारक में देखते हैं यहाँ से जो कुछ भी प्रेरणास्पद कार्यक्रम किए जा रहे हैं उन सबके मूल में निःसंदेह स्वामी तत्त्वबोध जी सरस्वती हैं। आज इस अवसर पर हम उस महामना को स्मरण करते हुए संकल्प करें कि उनके दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए इस स्मारक को और भी अधिक सशक्त और प्रेरणास्पद बनायेंगे।

कार्यक्रम से पूर्व न्यास की यज्ञस्थली में न्यास पुरोहित श्री नवनीत आर्य के पौरोहित्य में यज्ञ सम्पादित हुआ। पश्चात् श्री अशोक आर्य द्वारा निर्मित एक डिजीटल भजन के अतिरिक्त श्री भवानीदास आर्य, व पीयूष-बंधुओं (इन्द्रदेव जी व सुधाकर जी) ने भजन प्रस्तुत किए। न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने उपस्थित जन समूह का आह्वान किया कि न्यास द्वारा प्रकाशित विश्व प्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' को अधिकाधिक हाथों में पहुँचाने का श्रम करें तथा मल्टीमीडिया सेन्टर के रूप में जो गतिविधि आरम्भ की गई है उससे अधिकाधिक विद्यालय लाभान्वित हों, इस हेतु अपने संपर्कों का प्रयोग करते हुए ऐसा प्रयत्न करें।

न्यास के संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने सभी सहयोगियों व श्रोतागणों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री नारायणलाल मित्तल ने किया। कार्यक्रम से पूर्व न्यास कोषाध्यक्ष श्री नारायण लाल मित्तल के संयोजन में अल्पाहार का कार्यक्रम भी रखा गया।

न्याय-निर्णयन

जो राजा, दण्डनीयों को न दण्ड और अदण्डनीयों को दण्ड देता है, अर्थात् दण्ड देने योग्य को छोड़ देता है, जिसको दण्ड देना न चाहिए उसको दण्ड देता है, वह जीता हुआ

बड़ी निन्दा को, और मरे पीछे बड़े दुःख को प्राप्त होता है। इसलिए जो अपराध करे उसको सजा दण्ड देवें और अनपराधी को दण्ड कभी न देवें।

शुक्रनीति (४-५३) में भी कहा है- दण्ड देने योग्य व्यक्ति को दण्ड न देने से, अदण्डनीय को दण्ड देने से तथा नियमानुसार जरूरत से अधिक दण्ड देने से, गुणीजन राजा के विरुद्ध हो जाते हैं। ऐसा करने से राजा स्वयं भी पापी हो जाता है। इसके लिए निर्णायक समिति का कुशल होना बहुत जरूरी है। वह कैसी हो इसका निर्देश शुक्रनीति (४-५-१६, १७) में हमें मिलता है-

व्यवहारविदः प्राज्ञा वृत्तशीलगुणान्विताः।

..............सर्वासु जातिषु॥

अर्थात् वे व्यवहार कुशल, विद्वान्, चरित्रवान, शील और गुणों से युक्त, शत्रु और मित्र के साथ समान व्यवहार करने वाले, धर्म के मर्म को जानने वाले, सत्यवादी, आलस्यरहित, काम, क्रोध और लोभ को जानने वाले तथा मधुरभाषी आदि गुणों से युक्त होने चाहिए तथा इनकी नियुक्ति सभी वर्णों में से की जाए। ऐसे गुणी व्यक्ति ही निष्पक्ष होकर तमाम साक्षियों तथा अपने विवेक के आधार पर सही निर्णय ले सकने में समर्थ हो सकते हैं। निर्णय लेने के लिए साक्षी तो हो, पर नहीं होने पर भी निष्पक्ष न्याय सुनिश्चत करने हेतु शुक्रनीति (२-६५, ६६, ६७) में निर्देश है कि वह सभा में स्थित हो, सभ्यों के साथ मिलकर साक्षियों द्वारा प्रस्तुत सत्य या छल से युक्त मनुष्यों को तथा अपनी इच्छा से पैदा किए हुए अथवा यथार्थरूप से स्थापित किए विवादों को विचारकर उनमें से किसी की साक्षी या लेख के अभाव में दिव्य साधनों (अपने विवेक) से एवं किसी का बहुत लोगों की सम्मति से और किसमें कौन सा प्रमाण ठीक होगा, इसका प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान तथा लोकशास्त्र से विचारकर जो निर्णय हो, उसे ही राजा से निवेदन करें। **निर्णय की निष्पक्षता को सुनिश्चित करने के लिए ज्यूरी को यह भी निर्देश है कि** (शु.नी. ४-५-१८६) **वादी और प्रतिवादी के समक्ष में ही साक्षी की गवाही लेनी चाहिए, परोक्ष में कभी नहीं।** साक्षी किन व्यक्तियों की लेनी चाहिए तथा किन परिस्थितियों में साक्षी की भी जरूरत न समझें इस बारे में भी महर्षि जी का आदेश साफ है-

आप्ताः सर्वेषु वर्णेषु............साक्षिणः।

...........गुणिद्वैधे द्विजोत्तमान्॥ - मनु. ८-६३, ६८, ७२, ७३

सब वर्णों में धार्मिक, विद्वान्, निष्कपटी सब प्रकार धर्म को जानने वाले, लोभ रहित, सत्यवादी को न्यायव्यवस्था में साक्षी करे, इससे विपरीतों को कभी न करें। स्त्रियों की साक्षी स्त्री, द्विजों के द्विज, शूद्रों के शूद्र और अन्त्यजों के अन्त्यज साक्षी हों। जितने बलात्कार, काम-चोरी, व्यभिचार, कठोरवचन, दण्डनिपातनरूप अपराध हैं, उनमें साक्षी की परीक्षा न करे और अत्यावश्यक भी न समझे, क्योंकि ये काम सब गुप्त होते हैं। दोनों ओर के साक्षियों में से बहुपक्षानुसार, तुल्य साक्षियों में उत्तमगुणी पुरुष की साक्षी के अनुकूल और जो दोनों के साक्षी उत्तमगुणी और तुल्य हों तो द्विजोत्तम अर्थात् ऋषि-महर्षि और यतियों की साक्षी के अनुसार न्याय करें। आगे इसी प्रसंग में वे दो प्रकार के साक्षियों की चर्चा करते हैं।

समक्षदर्शनात्........तदपार्थकम्॥ - मनु. ८-७४, ७५, ७८

मनु महाराज के इस उद्धरण के द्वारा महर्षि कहते हैं कि दो प्रकार के साक्षी होते हैं, एक साक्षात देखने, और दूसरा सुनने से। जब सभा में पूछे तब जो साक्षी सत्य बोलें, वे धर्महीन और दण्ड के योग्य न होवें और जो साक्षी मिथ्या बोलें, वे यथायोग्य दण्डनीय हों। दण्ड भी ऐसा कठोर दिया जाए कि जिह्वा के छेदन से दुःखरूप नरक को वर्तमान समय में प्राप्त होवे और मरने के बाद सुख से हीन हो जाए।

❑❑❑

सम्पादक- अशोक आर्य

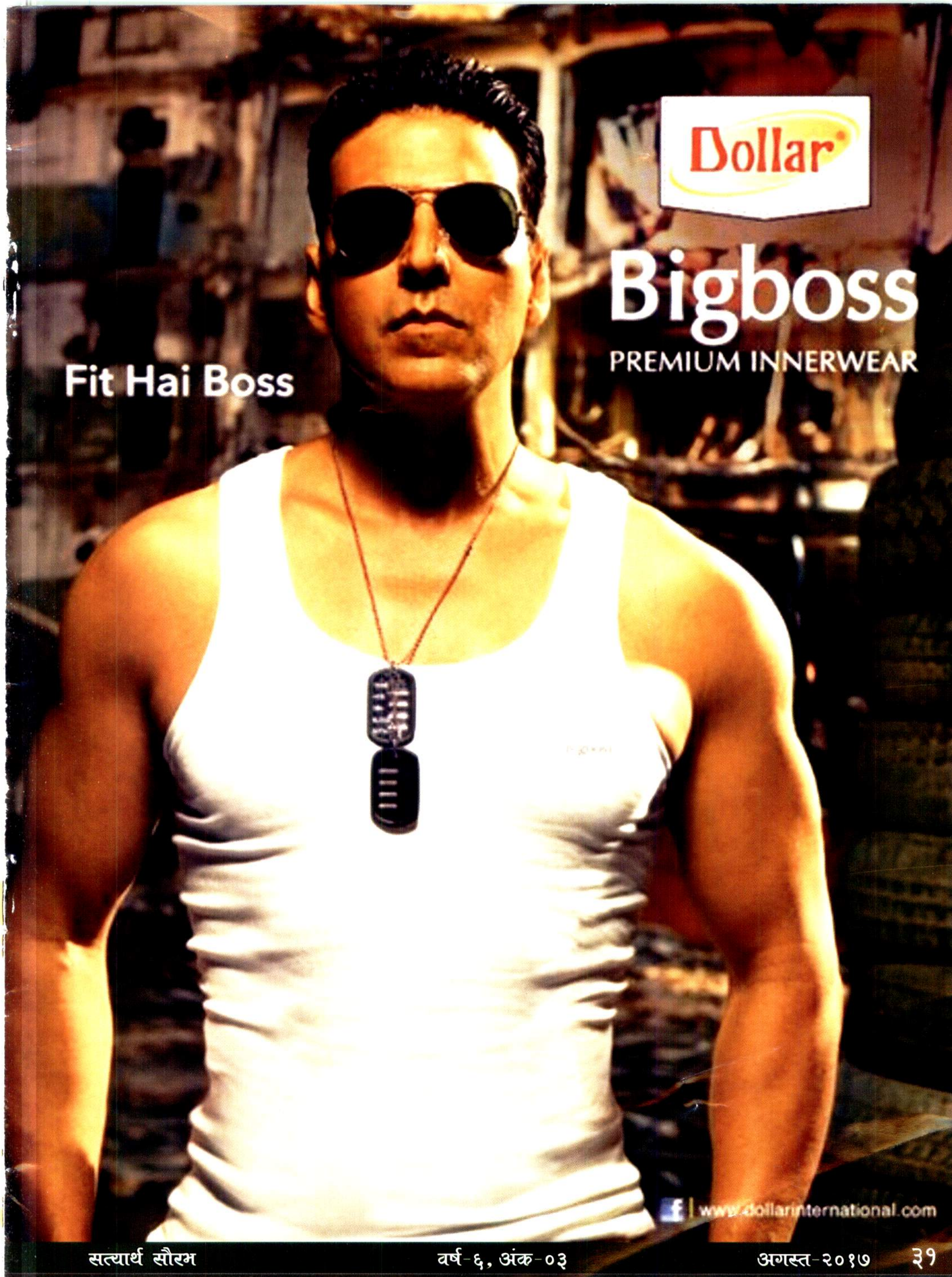
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarinternational.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 August-2017 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जब तक गुरुकुल में रहैं, तब तक माता-पिता के समान अध्यापकों को समझें और अध्यापक अपने सन्तानों के समान शिष्यों को समझें।

- सत्यार्थप्रकाश पृ. १०९

COPL-4915

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्या[illegible]स, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयान[illegible]र्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर